के आर्य्य आहुतिकार एवं अन्य रचनाएं

लेखक—स्व० अक्षर जी

❀ ओ३म् ❀

अतीत के आर्य्य आहुतिकार

एवं

अन्य रचनाएं

वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित
गीत और कविताओं
का संग्रह

लेखक—स्व० अक्षर जी

प्रस्तुत पुस्तिका के लेखक
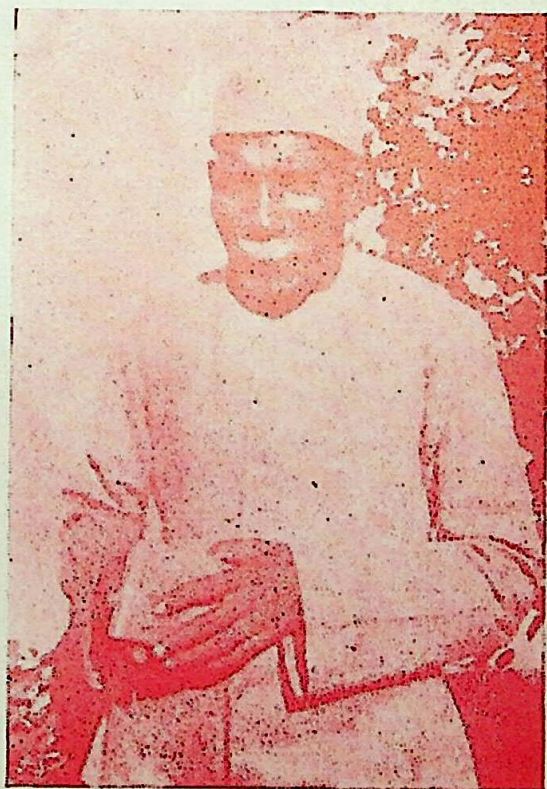
स्व० श्री पं० सुन्दरलाल जी 'अक्षर'

श्री पं० सुन्दरलाल जी 'अक्षर'

श्री पं० सुन्दरलाल जी शर्मा से मेरा परिचय सम्भवतः सन् १९६३ या १९६४ में अजमेर में हुआ था । उस समय आप 'जनरल लाइफ इंश्योरेंस कम्पनी', के कार्यालय में कार्य करते थे। मैंने इसी कम्पनी का जीवन-बीमा पत्र ले रखा था । इस कारण मुझे यदा कदा कम्पनी के कार्यालय में जाना पड़ता था (परिचय किस प्रकार हुआ, यह तो मुझे स्मरण नहीं) । यह परिचय उत्तरोत्तर बढ़ता गया । कुछ समय पश्चात् आपने मुझ से संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की । मेरे द्वारा स्वीकृति देने पर आप अपने एक मित्र के साथ गुरुवर श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु द्वारा लिखित "संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि" पढ़ने के लिये आते रहे । आपने थोड़े समय में ही न केवल उक्त पुस्तक को आत्मसात् कर लिया, अपितु अष्टाध्यायी के कुछ प्रकरण भी आपने पढ़ लिये ।

आप कार्य से निवृत्त हो कर 'आगरा' (अपने मूल स्थान पर) चले गये । वहीं रहकर आपने कविता के उपनाम 'अक्षर' के अनुरूप अक्षर ब्रह्म की साधना में लग गये । आप ने अनेक लेखकों की हिन्दी पुस्तकों का अंग्रेजी भाषा में और अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया (देखें--पृष्ठ १०) ।

मेरे अजमेर से 'बहालगढ़' (सोनीपत) आ जाने पर पारस्परिक सम्पर्क टूट गया । सन् १९८० में अचानक आपका आगरा से भेजा गया पत्र मिला । उसमें आपने लिखा था—मैंने श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु द्वारा लिखित 'संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम-

विधि' का अंग्रेजी में अनुवाद किया है, उसे मैं आपको दिखाना चाहता हूं। मुझे पत्र पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। मैंने अंग्रेजी अनुवाद मंगवाया और रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा संचालित 'पाणिनि-विद्यालय' के आचार्य एवं मेरे सहयोगी श्री पं० विजयपाल जी 'विद्यावारिधि' को अंग्रेजी अनुवाद देखने को दिया। अनुवाद देख कर उन्हें इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई कि श्री अक्षर जी ने अनुवाद में भी मूल लेखक की लेखन--शैली का बड़ी कुशलता से अनुसरण किया है। किसी भी पुस्तक के अनुवाद में मूल लेखक की शैली का यथावत् अनुसरण करना कठिन होता है, फिर व्याकरण-सम्बन्धी ग्रन्थ के अनुवाद में तो यह अत्यन्त कठिन है। यह अनुवाद इस बात का प्रमाण है कि आपने पाणिनीय व्याकरण का गहन अनुशीलन कर लिया था।

सरलतम-विधि का श्री अक्षर जी कृत अनुवाद रामलाल कपूर ट्रस्ट ने सन् १९८२ में प्रकाशित किया। आरम्भ में कुछ छपे फार्म आप को देखने के लिये भेजे गये। आप के सन्तुष्ट हो जाने पर आगे छपे फार्म नहीं भेजे गये। इसी बीच में आप का निधन हो गया। आप को अपने जीवन में इस पुस्तक को समग्ररूप में छपे हुए देखने का अवसर नहीं मिला। हमें आप के निधन की सूचना भी सरलतम-विधि के अंग्रेजी अनुवाद की छपी हुई पुस्तकें भेजने पर डाकखाने द्वारा 'प्राप्त करने वाला मर गया है' टिप्पणी के साथ वापस मिलने से मिली।

आप आर्यसमाज के मूक सेवक थे। लोकैषणा से अत्यन्त दूर रहते थे। आप वस्तुतः 'सन्त' स्वभाव के थे। यही कारण है आपने जिन पुस्तकों का भाषान्तर किया, उन में अपना नाम तक नहीं दिया। प्रकाशकों को भी लिख दिया करते थे कि अनुवादक के रूप में मेरा नाम न छापें। आप अपनी कविताएं 'अक्षर' नाम से ही लिखते

और प्रकाशित करते थे। हमें भी सरलतम-विधि के अंग्रेजी अनुवाद पर भी नाम छापने के लिये निषेध कर दिया था।

आपके अनुज श्री शिवदत्त जी शर्मा ने श्री अक्षर जी लिखित 'आर्यसमाज के अतीत के आहुतिकार' नामक एक कवितामयी रचना तथा उनके द्वारा लिखित कुछ फुटकर कविताओं को अपने ज्येष्ठ भ्राता की स्मृति में छपवाने का विचार प्रकट किया। कार्य की व्यवस्तता होने पर भी मैंने इसे स्वीकार कर लिया। श्री अक्षर जी ने आर्यसमाज के अतीत के १०८ आहुतिकार मनीषियों के नामों का हरिगीतिका छन्द में संकलन किया है और प्रत्येक के परिचय में अत्यन्त संक्षिप्त टिप्पणियां दी हैं। इस प्रकार हम इसे 'आ० स० के अतीत के अष्टोत्तरशत आहुतिकार नाम स्तोत्र' कह सकते हैं।

श्री पं० शिवदत्त जी शर्मा ने इस ग्रन्थ को अपने ज्येष्ठ भ्राता अक्षर जी की स्मृति में छपवा कर विना मूल्य वितरण करने के विचार से इस का मूल्य नहीं रखा हैं।

श्री अक्षर जी ने रामलाल कपूर ट्रस्ट को सरलतम-विधि का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करने के लिये दिया। इसलिये रा० ला० कपूर ट्रस्ट ने भी इस पुस्तिका के मुद्रण में ५०० रुपये की सहायता मुद्रण कार्य के रूप में दी है।

युधिष्ठिर मीमांसक

सफेद कपड़ों में सन्त

(श्री सुन्दरलाल जी 'अक्षर' का संक्षिप्त परिचय)

आपका जन्म उत्तर प्रदेश के एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप बचपन से ही धार्मिक एवं सदाचारी थे। समृद्ध परिवार के सदस्य होते हुए भी आप सदैव सादा जीवन व्यतीत करते थे। 'सादा जीवन उच्च विचार' के आप एक उत्कृष्ट मिसाल थे। परिवार के सभी सदस्यों को अपनी मूक प्रेरणाओं तथा अपने आदर्श त्यागमय जीवन से प्रेरणा देते रहे। बड़ों का आदर और सब से स्नेह तो उनका स्वभाव था। मातृ एव पितृ-भक्ति उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनके विचार धार्मिकता से ओतप्रोत थे। अपनी स्वकीय आवश्यकताओं को पूर्णतया सीमित रखकर ज्यादा से ज्यादा परोपकार करना ही उनका ध्येय था। तप तथा त्याग ही उनके विशेष गुण थे।

उनका सारा जीवन महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं से प्रभावित था। उनका समस्त चिन्तन महर्षि के प्रति समर्पित था। वे आजीवन ऋषि कृत ग्रन्थों का पारायण करते रहे। जीवन के संध्या काल में भी जिन चार ग्रन्थों का पारायण वे नियमित रूप से करते थे वे हैं— सत्यार्थप्रकाश, 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका', संस्कारविधि तथा आर्य्याभिविनय।

उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में ही महर्षि दयानन्द के जीवन की कुछ विशेष घटनाओं को लेकर सुन्दर सरस गीतों की रचना की थी, परन्तु अवकाश प्राप्त करने के उपरान्त तो काव्य-सरिता निर्बाध रूप से प्रवाहित होने लगी और उन्होंने अनेक गीतों एवं कविताओं की रचना की जिस में से कुछ चुने हुए गीत इस संकलन में स्थान पा

रहे हैं। अनेकों वेद-मंत्रों एवं सूक्तियों का उन्होंने हिन्दी में पद्यानुवाद भी किया था।

जिस समय आप जीवन बीमा निगम में अजमेर में काम करते थे, उस समय आपने कुछ समय के लिये स्वनामधन्य पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के यशस्वी शिष्य पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक से 'सरलतम-विधि' से संस्कृत पढ़ी। उसके पश्चात् वे स्वयं संस्कृत का अभ्यास करते रहे और शनैः शनैः संस्कृत व्याकरण में अच्छी योग्यता प्राप्त करली।

आपने स्वतः की प्रेरणा से अनेक वेद-मन्त्रों एवं पुस्तकों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था। महात्मा आनन्द स्वामी जी रचित 'आनन्द गायत्री कथा' एवं 'एक ही रास्ता' का Ananda Gayatri Discourses' तथा 'The only way'के नाम से अंग्रेजी में अनुवाद किया था। इसे गोविन्दराम हासानन्द (नई सड़क दिल्ली) ने प्रकाशित किया है।

'वेद-संस्थान' (अजमेर) के संस्थापक श्री स्वामी विद्यानन्द जी विदेह रचित 'जीवन--ज्योतियां' का भी आपने Lives Illumined नाम से अनुवाद किया था। जो 'वेद-सविता' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था।

इसी प्रकार श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु विरचित 'संस्कृत पठन--पाठन की अनुभूत सरलतम--विधि' का अंग्रेजी भाषा में The Tested Basiest method of Learning and Teaching Sanskrit नाम से अनुवाद किया, जिसे रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत) ने प्रकाशित किया।

आपने और भी अनेकानेक पुस्तकों का अंग्रेजी और संस्कृत की पुस्तकों का भाषा में पद्यानुवाद किया था। इन सब को सूची हम आगे प्रकाशित कर रहे हैं।

आपने अपने किसी भी अनुवाद में अपना नाम नहीं छपने दिया। आप अत्यन्त साधु स्वभाव के लोकैषणा से दूर भागने वाले सन्त पुरुष थे। गीता के 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' के अनुसार वे एक सच्चे योगी थे। आप आजीवन अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर रहे और अधिकारों की कभी लेशमात्र भी चिन्ता नहीं की। उनका सारा जीवन यज्ञमय था। उन्होंने यज्ञ की आत्मा 'स्वाहा' और यज्ञ के प्राण 'इदन्न मम' को अपने जीवन में चरितार्थ कर रखा था। न नाम की चाह, न प्रतिष्ठा की भूख, न पैसे का मोह, यह था उनका जीवन-दर्शन।

उनका वास्तव में किसी से वैर नहीं था। वे वास्तव में अजातशत्रु थे। शत्रुओं के प्रति भी उनके हृदय में सदा सद्भाव ही रहता था। शत्रु भी उनकी दृष्टि में सेवा और सहानुभूति के पात्र थे। जैसा कि वेद-संस्थान (अजमेर) के संस्थापक स्वामी विद्यानंद जी विदेह कहा करते थे वे वास्तव में "सफेद कपडों में सन्त थे"।

शिवदत्त शर्मा

श्री अक्षर जी द्वारा प्रकाशित

१. अथ शिवसंकल्प-मन्त्राः—इन ६ मंत्रों का "मंगलमय विचारों के लिये प्रार्थना" के नाम से भाषा में पद्यानुवाद और "A Prayer for Auspicious Thoughts" के नाम से अंग्रेजी में पद्यानुवाद।

२. अथ गायत्री-मन्त्रः—गायत्री मन्त्र का हिन्दी और अंग्रेजी में ईश्वर प्रार्थना एवं The Lord prayer के नाम से अनुवाद (शब्दार्थ – Word-meaning)।

३. वैवाहिक प्रतिज्ञायें—विवाह के अवसर पर वर वधू की ओर से ली जाने वाली प्रतिज्ञाओं का हिन्दी में पद्यानुवाद।

४. वैदिक-प्रार्थना—वैदिक-प्रार्थना के १६ मन्त्रों का सरस सुवोध भाषा में पद्यानुवाद।

५. The Glorious Land गौरवेरित-भूमि—मैक्समूलर के —I should point to India का "मैं भारत की ओर संकेत करूंगा" के नाम से भाषानुवाद।

६. भद्र-भावना—यजुर्वेद के अ० २२ मं० २२ "आदर्श राष्ट्रम्" और गुरुदेव रवीन्द्र नाथ कृत गीताञ्जलि गीत नं० ३५ An Ideal Country का भाषा में पद्यानुवाद।

७. आराधना—वैदिक संध्या का सरल पद्यानुवाद (पुस्तक)।

नोट—इनका कोई मूल्य नहीं है, ये विना मूल्य मात्र प्रचार के लिये वितरित करने के लिये हैं।

श्री अक्षर जी द्वारा अनुवादित उन पुस्तकों की सूची जिन्हें प्रकाशक का इन्तजार है

१. शेक्सपियर रचित नाटक हैमलेट (Hamlet) का हिन्दी पदयानुवाद।

२. शेक्सपियर रचित नाटक रोमियो और जूलियट (Romeo and Juliet) का हिन्दी पद्यानुवाद।

३. अंग्रेजी कवि Wordswoith की रचना WE ARE SEVEN का हिन्दी पद्यानुवाद।

१. प्रार्थना-पुञ्ज अर्थात् ईश्वर-स्तुति, प्रार्थनोपासना तथा स्वस्तिवाचन, शान्ति-प्रकरण मन्त्रों और आर्याभिविनय का पद्यानुवाद (अतुकान्त रोला छन्द में)।

२. कठोपनिषद् का हिन्दी पद्यानुवाद।

३. श्रीमद्भगवद्गीता का हिन्दी पद्यानुवाद।

४. श्री आनन्द स्वामी सरस्वती कृत दयानन्द वचनामृत का अंग्रेजी में Dayanand–Word Nectar के नाम से अनुवाद।

५. विश्वबन्धु शास्त्री द्वारा लिखित 'मानवता का मान' का अंग्रेजी में The Measure of Humanity के नाम से अनुवाद।

६. गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित "आनन्द की लहरें" का 'Wavelets of Bliss' के नाम से अंग्रेजी में अनुवाद।

७. स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज द्वारा रचित 'सर्वदानन्द-सुमनमाला' का हिन्दी पद्यानुवाद।

श्री अक्षर जी के प्रति दो कवियों की

भावभीनी श्रद्धाञ्जलियां

ले०—कवि विनोद सोमानी 'हंस'
(अजमेर के ख्यातिप्राप्त तरुण साहित्यकार)

द्वेष भाव के मित्र से, करते रहे मलाल।
जीवन बीमा निगम के, ऐसे सुन्दरलाल ॥

तुमसे विरले देखे मैंने।
क्या क्या आदर्श बताये तैंने ॥

साधुपन का वेष छिपाये, सिर पर काली केप लगाये;
मन में शांति का भाव रमाये, ऐक्य भाव का ध्यान जगाये।
उलझाये नहीं झमेले तैंने। तुमसे०

नहीं किसी से लेना देना, व्यर्थ बात का कभी न कहना;
सादे जीवन में ही रहना, उच्च भाव धारा में बहना।
समझा अपना जैसा तैंने। तुमसे०

नहीं किसी से राग द्वेष था, कोसों इनसे दूर क्लेश था;
राजनीति का रोग नहीं था, साहित्य क्षेत्र ही एक देश था।
विजय प्राप्त की हंस--हंस तैंने। तुमसे०

सन्तोष प्रेम का पाठ पढाया, शुद्ध भाव का सबक सिखाया;
अहंभाव मन कभी न आया, कर्त्तव्य जोत का दीप जलाया।
की जग जननी की सेवा तैंने। तुमसे०

जाओ मास्टर जी याद करेंगे, तेरे प्रेमी ये गुण-ग्राहक,
तुझे कभी नहीं भूलेंगे, अन्तर्मन के सच्चे चाहक।
हंस जगाये सोये तैंने। तुमसे विरले देखे मैंने ॥

ले०—श्री छोटेलाल शर्मा 'ओ३म्'
(कोटा के प्रसिद्ध कवि की पारिवारिक श्रद्धाञ्जलि)

१.

विकार से दूर, सदा पर उपकार चूर,
विद्या भरपूर, सद्गुणी के भुवाल थे।
मानवता पुजारी, सदाचारी, धर्मधारी,
दीन हितकारी विद्यादान हित कृपाल थे।
सत्कर्म में लगन, 'ओ३म्' नाम में मगन,
गाये प्रभु के भजन, सत्य निष्ठा निहाल थे।
वैदिक ज्ञान के महान्, कर्त्ता सनमान,
गुणों की खान, देव सुन्दरलाल थे॥

२.

कविता प्रांगण में, सरस मृदु वाणी रच,
भाव भरी भाषा, भव्य रस के रसाल थे।
छन्दों में अति प्रिय, हरिगीतिका छन्द जिन्हें,
साहित्य सरोवर के मानस मराल थे।
अनेकों श्लोकों औ आर्ष ग्रन्थ सूक्तियों का,
करके अनुवाद काव्य स्रष्टा कमाल थे।
जीवन था सादा, पर रखते थे विचार उच्च,
मुनि[1] अभिमान की शान सुन्दरलाल थे॥

❀ ❀ ❀

१. अक्षर जी के पिता श्री मुनिलाल।

अतीत के आर्य आहुतिकार

हो अमर आर्यसमाज उन्नति त्रिविध लाने के लिये।
संसार का उपकार मुख्योद्देश्य पाने के लिये ॥ १ ॥

इसको सुसंस्थापित किया शत वर्ष पूर्व महर्षि ने।
गुरु देव के आदेश को सम्यग् निभाने के लिये ॥ २ ॥

आकर अनेक प्रवीर दृढ संकल्प सेवा-भाव से।
कर्त्तव्य-पालन में लगे ऋषि-ऋण चुकाने के लिये ॥ ३ ॥

छन्द हरिगीतिका २८ (५, १२, १९, २६ ल)

आर्यसमाज को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने १८७५ ई० में बम्बई में स्थापित किया था जिसका छठा नियम है कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना"।

स्वामी जी के गुरुवर प्रज्ञाचक्षु दण्डी विरजानन्द जी महाराज थे, जिनसे मथुरा में स्वामी जी ने विद्याध्ययन किया था। विदाई के समय जो गुरु जी से आज्ञा मिली उसका उन्होंने मृत्युपर्यन्त पालन किया और उसी को पूर्ण करने के उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की।

वैदिकज्योति को फैलाने में अनेक व्यक्तियों ने सहयोग प्रदान किया उनमें से यहाँ केवल थोड़े से नाम दिये जा सके हैं, यद्यपि ज्ञात और अज्ञात अनेक व्यक्ति इस शुभ यश के भागी हुए हैं।

[1]गुरुदत्त मेधावी विरल विद्यार्थी आये यहां ।
सत्यार्थ का विस्तार चहूं दिश में कराने के लिये ॥ ४ ॥

विजयी असत्य अराति पर हो [2]लेखराम महारथी ।
बनकर पथिक चलते हुए वापस न आने के लिये ॥ ५ ॥

प्राचीन थी गुरुकुल प्रणाली श्रेष्ठ [3]श्रद्धानन्द को ।
बिछुड़े हुओं को सतत् तत्पर थे मिलाने के लिये ॥ ६ ॥

थे [4]लाजपत आये बचाने लाज पीडित देश की ।
वृत्तान्त करुणा 'दुखित भारत' का सुनाने के लिये ॥ ७ ॥

---

(१) पं० गुरुदत्त विद्यार्थी M. A. ने वेदों पर पाश्चात्य विद्वानों के आक्षेपों के बड़े विद्वत्तापूर्ण उत्तर दिये । स्वामी दयानन्द सरस्वती की मृत्यु के समय अजमेर में उनके समीप उपस्थित थे, D. A. V. College लाहौर के संस्थापकों में से थे ।

(२) धर्मवीर पं० लेखराम आर्यमुसाफिर ने वैदिक धर्म का प्रबलता से प्रचार किया । कुरान के अच्छे ज्ञाता थे और धर्म कार्य में ही उनका बलिदान हुआ । स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र उर्दू में लिखा ।

(३) स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुन्शीराम) ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना और शुद्धि-आन्दोलन चलाया, जिस में उनका बलिदान हुआ ।

(४) पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने Arya Samaj तथा Unhappy India पुस्तकों की रचना की । D. A. V. College लाहौर के संस्थापकों में से थे । स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रमुख नेताओं में आपकी गणना थी ।

सर्वस्व कर शिक्षा निछावर [5]हंसराज विदा हुए ।
सन्नद्ध मानव-संकटों को थे हटाने के लिये ॥ ८ ॥

[6]गणपति सु-शर्मा [7]दर्शनानंद थे शिरोमणि तर्क के ।
जगरांव जन्मे एक पहुंचे अन्य जाने के लिये ॥ ९ ॥

पुरुषार्थ [8]नित्यानन्द ने ओषधि बताई सिद्धि की ।
सन्मार्ग आये [9]सर्वदानंद भी दिखाने के लिये ॥ १० ॥

---

(५) महात्मा हंसराज D. A. V. College लाहौर के संस्थापकों में से थे, तथा आप ही College के सर्व प्रथम प्रधानाचार्य (Principal) भी हुए। देश में कही भी संकट आता था तो वे वहां सहायता भेजने की व्यवस्था करते थे।

(६) पं० गणपति शर्मा बड़े तार्किक और विद्वान् थे। उन्होंने कश्मीर में ईसाइयों के मुकाबले में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

(७) स्वामी दर्शनानन्द (पं० कृपाराम) बड़े तार्किक और विद्वान् थे। उन्होंने कई दर्शनों पर भाष्य तथा बहुत से ट्रैक्ट सिद्धान्त विषयों पर लिखे थे। महाविद्यालय ज्वालापुर उनका स्थापित किया हुआ है। वृक्षो में जीव विषय पर पंडित जी और स्वामी जी में ऐतिहासिक शास्त्रार्थ महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ था।

जगरांव (पंजाब) स्वामी जी की जन्मभूमि और वही पंडित जी का मृत्यु स्थल भी हुआ।

(८) ब्रह्मचारी स्वामी नित्यानन्द ने पुरुषार्थ-प्रकाश ग्रन्थ लिखा था। चारों वेदों की पदानुक्रमणिका (word Index) प्रकाशित कराई।

(९) वीतराग स्वामी सर्वदानन्द ने 'सन्मार्ग-दर्शन' की रचना की। हरदुआगंज (अलीगढ के समीप) में साधु आश्रम की स्थापना की।

[10]शंकर महाकवि गातृ [11]बस्तीराम [12]अमीचंद तथा ।
[13]तेजसिंह [14]नत्थासिंह आये भजन गाने के लिये ॥ ११ ॥

[15]जिज्ञासु [16]वेदानन्द उभ [17/18] गंगाप्रसाद प्रबुद्ध थे ।
पटु [19]बुद्धदेव [20]देहलवी शंका मिटाने के लिये ॥ १२ ॥

---

(१०) पं० नाथूराम शंकर शर्मा- महाकवि ने 'शंकर-सरोज' 'अनुराग-रत्न' की रचना की तथा उनके पश्चात् 'शंकर-सर्वस्व' उनकी समस्त कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ ।

(११) पं० वस्तीराम और (१२) भक्त अमीचन्द अच्छे गायक थे ।

(१३) चौधरी तेजसिंह तथा (१४) ठाकुर नत्थासिंह विख्यात भजनोपदेशक थे ।

(१५) पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु अष्टाध्यायी के बड़े विद्वान् थे । व्याकरण की प्राचीन शैली का काशी में रहकर प्रचार किया । वहां के विद्वानों ने भी इस पद्धति का समर्थन किया ।

(१६) स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ ने 'स्वाध्याय-संदोह' तथा स्थूलाक्षर सत्यार्थप्रकाश संस्करण प्रकाशित किया ।

(१७) पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय M.A. अनेक पुस्तकों के रचयिता थे उनमें 'आस्तिकवाद', जीवात्मा' और Light of Truth मुख्य हैं ।

(१८) पं० गंगाप्रसाद M. A. रिटायर्ड चीफ जज टेहरी स्टेट की Fountain head of Religion तथा Kathopanishad मुख्य-रचनायें हैं ।

(१९) पं० बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द) वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् तथा शास्त्रार्थ महारथी थे ।

(२०) पं० रामचन्द्र देहलवी कुरान के अच्छे ज्ञाता थे तथा शास्त्रार्थ महारथी थे ।

[21]आर्यमुनि, [22]तुलसीराम, [23]शिवशंकर, न [24]क्षेमकरण रहे।
[25]जयदेव, [26]राजाराम भाष्यों के रचाने के लिये॥ १३ ॥

अनुवाद [27]अर्जनसिंह [28]भारद्वाज [29]घासीराम ने।
[30]दुर्गाप्रसाद किये विदेशों में पढ़ाने के लिये॥ १४ ॥

---

(२१) पं० आर्यमुनि महामहोपाध्याय वेद, दर्शन, उपनिषदादि के भाष्यकार थे।

(२२) पं० तुलसीराम स्वामी सामवेद, दर्शनों और मनुस्मृति के भाष्यकार थे।

(२३) पं० शिवशंकर काव्यतीर्थ वृहदारण्यक और छान्दोग्य उपनिषदों के भाष्यकार थे।

(२४) पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी अथर्ववेद और गोपथ-ब्राह्मण के भाष्यकार थे।

(२५) पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार, मीमांसातीर्थ चारों वेदों के भाष्यकार थे।

(२६) पं० राजाराम शास्त्री वेद, दर्शन और गीता के भाष्यकार थे।

(२७) बावा अर्जनसिंह सम्पादक Arya Patrika तथा आर्योद्देश्य रत्नमाला, व्यवहारभानु, मेला चांदापुर आदि पुस्तकों के अंग्रेजी अनुवादक थे।

(२८) डा० चिरञ्जीव भारद्वाज F.R.C.S. ने सत्यार्थप्रकाश का Light of Truth नामक अनुवाद किया।

(२९) पं० घासीराम M.A. ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का अंग्रेजी अनुवाद किया तथा श्री देवेन्द्रनाथ मुख्योपाध्याय रचित दयानन्द-चरित का हिन्दी अनुवाद किया।

(३०) श्री दुर्गाप्रसाद सम्पादक Harbinger ने भी सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद किया।

[31]नारायण स्वामी, [32]चमूपति, [33]इन्द्र, [34]आत्माराम थे।
तत्वज्ञ [35]भगवद्दत्त, [36]रामदेव गिनाने के लिये ॥ १५ ॥

[37]भोजदत्त, [38]कालीचरण, [39]आत्मानन्द, [40]ब्रह्मानन्द भी।
थे [41]रामसहाय धर्म संदेश पहुंचाने के लिये ॥ १६ ॥

---

(३१) महात्मा नारायण स्वामी गुरुकुल वृन्दावन के मुख्याधिष्ठता थे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। उन्होंने उपनिषदों का भाषा भाष्य, योग रहस्य, मृत्यु और परलोक आदि पुस्तकें लिखी।

(३२) श्री चमूपति ने योगेश्वर कृष्ण तथा Ten Commandments of Dayananda की रचना की।

(३३) पं० इन्द्रविद्यावाचस्पति ने "आर्यसमाज का वृहद् इतिहास" लिखा।

(३४) राजरत्न आत्माराम अमृतसरी ने संस्कार-चन्द्रिका तथा दिग्-विज्ञान पुस्तकें लिखीं।

(३५) पं० भगवद्दत्त Research Scholar ने वैदिक वाङ्मय का इतिहास, स्वामी दयानन्द के पत्र और विज्ञापन आदि पुस्तकों की रचना की।

(३६) आचार्य रामदेव सम्पादक Vedic Magazine तथा भारत वर्ष के इतिहास के रचयिता थे।

(३७) पं० भोजदत्त अरबी के विद्वान् थे। आगरे में अरबी पढ़ाने के लिये आर्य मुसाफिर विद्यालय स्थापित किया।

(३८) पं० कालीचरण अरबी—फारसी के विद्वान् थे। विचित्र, जीवन पुस्तक लिखने पर दण्डित किए गए।

(३९) स्वामी आत्मानन्द सरस्वती (भूतपूर्व पं० मुक्तिराम उपाध्याय आचार्य गुरुकुल, पोठोहर ने वैदिक गीता का प्रकाशन किया।

(४०) स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी ने एटा में गुरुकुल स्थापित किया और उसमें एक बड़ी यज्ञशाला का निर्माण किया। [४१ की टि० आगे देखो]

सम्पादकों में [42]रुद्रदत्त एवं [43]महाशय कृष्ण थे।
[44]पद्मसिंह, पद्मश्री [45]हरिशंकर यश कमाने के लिये ॥ १७ ॥

[46]देवेन्द्रनाथ हुए समुद्यत ऋषि चरित संकलन को।
[47]श्रीपाद सु-स्वाध्याय में निष्ठा बढ़ाने के लिये ॥ १८ ॥

---

(४१) पं० रामसहाय महोपदेशक, आर्यप्रतिनिधि सभा, राजस्थान, प्रान्त में गांव गांव में घूमकर खूब वैदिक धर्म का प्रचार किया। राधा का रहस्य पुस्तक की रचना की।

(४२) पं० रुद्रदत्त सम्पादकाचार्य ने आर्यमित्र साप्ताहिक का सम्पादन किया।

(४३) महाशय कृष्ण 'प्रताप' और 'वीर अर्जुन' के यशस्वी सम्पादक थे।

(४४) पं० पद्मसिंह शर्मा आर्योदय के सम्पादक थे।

(४५) पद्मश्री डा० हरिशंकर शर्मा प्रसिद्ध कवि, साहित्यकार तथा सम्पादक थे। आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान रहे। महाकवि पं० नाथूराम शंकर शर्मा के पुत्र थे।

(४६) श्री देवेन्द्रनाथ मुख्योपाध्याय ने बड़े परिश्रम से घूम कर अनेक वर्षों में दयानन्द चरित की सामग्री का संकलन किया।

(४७) पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् थे। अनेक ग्रन्थों के रचयिता तथा स्वाध्याय मण्डल, पारडी के संस्थापक थे। उन्होंने वेदों के सुन्दर और अशुद्धि रहित संस्करण प्रकाशित किये। आपने शत-वर्षीय आयु प्राप्त की।

[४८]रघुवीर भाषा विज्ञ निर्माता नये नव शब्द के।
थे [४९]विश्वबन्धु चयनक शब्दों के खजाने के लिये ॥ १९ ॥

चाची [५०]गुलाबदेवि व [५१]लक्ष्मीदेवि माता आगईं।
शिक्षा सं नारि वर्ग को ऊंचा उठाने के लिये ॥ २० ॥

थे [५२]अनुभवानंद, [५३]अच्युतानंद और [५४]ओमानन्द भी।
एवं [५५]अभेदानन्द सत्पथ को बताने के लिये ॥ २१ ॥

---

(४८) डा० रघुवीर M.A. Ph. D. D. Litt Et Phil प्रसिद्ध भाषा विज्ञ थे। उन्होंने बहुत से नये शब्दों की जो अंग्रेजी में थे हिन्दी में नहीं थे, रचना की। International Academy of Indian Culture Nagpur के Director थे।

(४९) आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री, संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् थे। उन्होंने बहुत से शब्द कोशों और सूचियों की रचना की। वे Vishweshwaranand Research Institute Hoshiarpur के अधिष्ठाता थे।

(५०) श्रीमती गुलाबदेवी (चाची जी) ने अजमेर में मथुराप्रसाद गुलाबदेवी आर्य कन्या पाठशाला स्थापित की जिसके द्वारा महिलाओं में विद्या का बड़ा प्रचार हुआ।

(५१) श्रीमती लक्ष्मीदेवी (माता जी) ने कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) का बड़ी योग्यता से संचालन किया।

(५२) स्वामी अनुभवानन्द ने 'आर्यसमाज का परिचय' लिखा।

(५३) स्वामी अच्युतानन्द ने चारों वेदों के शतक (सौ सौ मन्त्रों के चारों वेदों के संग्रह) प्रकाशित किये।

(५४) स्वामी ओमानन्द तीर्थ ने योग प्रदीप ग्रन्थ लिखा जो योगदर्शन के भाष्य के सम्बन्ध में अति प्रसिद्ध है।

(५५) स्वामी अभेदानन्द सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे।

[५६]विश्वेश्वरानन्द, [५७]स्वतन्त्रानंद तदनु [५८]ध्रुवानन्द थे।
उभयः [५९-६०] परमानन्द प्रिय वैदिक तरु सिचाने के लिये।। २२।।

हुत [६१]राजपाल [६२]शिवहरे [६३]गोविन्दराम हासानन्द भी।
श्री [६४]रामलाल कपूर ग्रन्थों के छपाने के लिये।। २३ ।।

---

(५६) स्वामी विश्वेश्वरानन्द की स्मृति में विश्वेश्वरानन्द अनुसंधान संस्थान, होशियारपुर चल रहा है।

(५७) स्वामी स्वतन्त्रानंद प्रसिद्ध संन्यासी थे।

(५८) स्वामी ध्रुवानंद (राजगुरु पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री) सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे।

(५९) भाई परमानन्द M.A. स्वतन्त्रता आन्दोलन के सम्बन्ध में भारत से निष्कासित हुए। 'मेरे अन्त समय के विचार' नामक पुस्तक की रचना की।

(६०) स्वामी परमानन्द ने पञ्चमहायज्ञविधि की रचना की। अच्छे वक्ता थे।

(६१) महाशय राजपाल अनेक पुस्तकों के प्रकाशक थे। इसी कार्य में इनका बलिदान हुआ।

(६२) श्री मथुरा प्रसाद शिवहरे, आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर के संस्थापक थे। चारों वेदों का भाष्य कराके प्रकाशित किया।

(६३) श्री गोविन्दराम हासानन्द ने कलकत्ते में आर्य साहित्य प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ किया। सन १९३९ में व्यवसाय दिल्ली में लाया गया सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, दयानन्दचित्रावली, दयानन्दप्रकाश आदि ग्रन्थ प्रकाशित किये।

(६४) श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ। इसमें अष्टाध्यायी भाष्य, स्वामी जी का यजुर्वेद भाष्य, वाल्मीकि रामायण आदि मुख्य है।

थे भक्त [६५]कालूराम, [६६]महता जैमिनि, [६७]आश्रित प्रभो।
[६८]नरदेव व [६९]देवराज विद्यालय चलाने के लिये ॥ २४ ॥
ग्रन्थ [७०]हरविलास, [७१]अभय, [७२]भूमानन्द, [७३]चिम्मनलाल थे।
[७४]ब्रह्ममुनि, [७५]रघुनन्दन थे रचे पीयूष पिलाने के लिये ॥२५॥

---

(६५) पं० कालूराम, रामगढ (सीकर) निवासी ने आर्यसमाज की स्थापना जयपुर (किशनपोल बाजार) में की। १८७७ में स्वामी जी से मिलने मेरठ गये और वहीं से वैदिक धर्म के प्रेमी बन गये।

(६६) श्री महता जैमिनि ने देश और विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

(६७) महात्मा प्रभुआश्रित (श्री टेकचन्द जी) यज्ञ कराने और योग साधना के लिये प्रसिद्ध थे।

(६८) पं० नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ, संस्कृत महाविद्यालय, ज्वालापुर के मुख्याधिष्ठाता थे।

(६९) श्री देवराज ने कन्या महाविद्यालय, जालन्धर में स्थापित किया।

(७०) दीवान बहादुर हर विलास शारदा ने Dayananda Commemotation Volume की रचना की। परोपकारिणी सभा के मन्त्री रहे। बाल विवाह निषेध विषयक शारदा एक्ट आपके ही द्वारा बना।

(७१) श्री अभय देव जी गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे। वैदिक स्वाध्याय के लिये वेदों के मन्त्रों का संग्रह व्याख्या सहित प्रकाशित किया।

(७२) स्वामी भूमानन्द सरस्वती M.A. ने Ecclesia Divinc रची तथा आर्याभिविनय, पञ्चमहायज्ञविधि और गोकरुणानिधि का अंग्रेजी अनुवाद किया।

(७३) श्री चिम्मनलाल गुप्त ने धर्मेन्द्र जीवन चरित्र, नारायणी शिक्षा पुराण तत्व प्रकाश आदि ग्रन्थ प्रकाशित किये।

(७४) स्वामी ब्रह्ममुनि (प्रियरत्न आर्ष) अनेक पुस्तकों के रचयिता थे विमान शास्त्र पर भी एक ग्रन्थ लिखा। [७५ की टि० आगे देखो]

लेखक [७६]बिहारीलाल, [७७]सुधाकर, उभ [७८।७९] बाबूराम थे।
सिद्धान्त [८०]छुट्टनलाल [८१]बदरीदत्त सिखाने के लिये ॥ २६ ॥

---

(७५) पं० रघुनन्दन शर्मा ने अक्षर विज्ञान, वैदिक सम्पत्ति की रचना की।

(७६) श्री विहारी लाल B.A. शास्त्री जबलपुर में The Vedas and them Dugas ahd upongro लिखे।

(७७) श्री ऐम, सुधाकर M.A. ने The Daily Prnyer of an Arya लिखे।

(७८) श्री बाबूराम शर्मा (इटावा) ने संजीवन बूटी, धर्म बलिदान, कन्या सुधार, मांसभक्षण विचार, शिव लिंगपूजा, मूर्तिपूजा विचार, मृतक श्राद्ध, पुराण शिक्षा आदि की रचना की।

(७९) श्री बाबूराम गुप्त (आगरा) M.A. Sanskrit Firsleless fiist) and phud (fiirstelass) ३. प्र० सभा के उपदेशक तथा आर्य मित्र के सम्पादक रहे। आगरा कालेज में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक रहे। उत्तम लेखक और वक्ता थे। कई अंग्रेजी के इतिहास ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया।

(८०) श्री छुट्टनलाल स्वामी भागवत समीक्षा, नियोग निर्णय, भागवत विचार, पंच कन्या चरित्र, वनिता बुद्धि प्रकाश, आर्यसमाज ने क्या किया, भीम प्रश्नोत्तरी आदि पुस्तकों के रचयिता थे।

(८१) श्री बदरीदत्त शर्मा ने ईश केन कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषद की व्याख्या, संस्कृत प्रवोध ४ भाग, अबला सन्ताप की रचना की।

[८२]श्रीराम, [८३]सालिगराम, [८४]पूरनचन्द कर्मठ थे बड़े ।
कार्य कुशल [८५]जियालाल [८६]चांदकरण कहाने के लिये ॥२७॥

प्रयत्न [८७]लक्ष्मीदत्त, [८८]हीरालाल, [८९]घीसूलाल के ।
[९०]योगेन्द्र, [९१]व्रजमोहन, सभी के जन जगाने के लिये ॥ २८ ॥

---

(८२) महात्मा श्रीराम, आर्यसमाज आगरा तथा आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश (संयुक्त प्रान्त) के मन्त्री रहे । गुरुकुल वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता के पद पर भी कार्य किया ।

(८३) श्री सालिगराम वकील, आर्यसमाज आगरा के प्रधान रहे । आर्यप्रतिनिधि सभा की अंतरंग के सदस्य रहे ।

(८४) श्री पूर्णचंद एडवोकेट बड़े अच्छे वक्ता थे, । आर्यप्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे । विश्व की पहेली आदि पुस्तकों के रचयिता थे ।

(८५) कर्मवीर श्री जीयालाल ने अजमेर में हिन्दुओं को संगठित किया तथा जगह-जगह व्यायाम-शाला खुलवाईं । दयानन्द कालेज, अजमेर की स्थापना की ।

(८६) देशभक्त कुंवर चांदकरण शारदा आर्यसामाजिक कार्यों में अग्रसर रहते थे । हैदराबाद सत्याग्रह में जत्था लेकर गये थे । संन्यास लेने पर आप चन्द्रानन्द नाम से प्रसिद्ध हुए ।

(८७) डा० लक्ष्मीदत्त पं० भोजदत्त जी के पुत्र थे । प्रभावशाली वक्ता और उपदेशक थे ।

(८८) श्री हीरालाल कोटा में जज थे । संध्या का अंग्रेजी पद्यों में अनुवाद किया । प्रभावशाली वक्ता थे ।

(८९) श्री घीसूलाल ऐडवोकेट अजमेर ने आर्यसमाज क्षेत्र में बहुत कार्य किया । प्रभावशाली वक्ता थे ।

(९०) स्वामी योगेन्द्र पाल प्रसिद्ध वक्ता और उपदेशक थे ।

[९१ की टि० आगे देखो]

बुधवर [92]महेश प्रसाद [93]गोपाल हरि [94]सन्नूलाल भी।
मत-तम [95]मुरारीलाल, [96]शिव शर्मा नशाने के लिये ॥ २६ ॥

---

(६१) पं० व्रजमोहन झा व्याख्यानवाचस्पति उच्च कोटि के वक्ता थे कानपुर में सनातनधर्मी विद्वानों से शास्त्रार्थ हुआ जिनमें इनकी विजय हुई। यज्ञों की व्यवस्था उत्तमता से करते थे। कई पुस्तकों की रचना की।

(६२) पं० महेशप्रसाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अरबी फारसी विभाग के अधिष्ठाता थे। आपकी पुत्री को वेदाध्ययन का अधिकारी है वा नहीं इस पर विवाद चलता रहा, अन्त में पढ़ने की आज्ञा मिल गई।

(६३) पं० गोपाल राव हरि ने प्रस्ताव रत्नाकर, दयानन्द दिग्विजयार्क, सुन्दरी सुधाकर ग्रन्थ लिखे।

(६४) श्री सन्नूलाल गुप्त ने स्त्री सुबोधिनी ५ भाग, कृष्ण के क्राइस्ट की रचना की।

(६५) प० मुरारीलाल शर्मा प्रचार और शास्त्रार्थ के लिए प्रसिद्ध थे सनातनी पंडितों को कई बार परास्त किया।

(६६) पं० शिव शर्मा महोपदेशक प्रचार और शास्त्रार्थ करते रहे। धर्म शिक्षा ५ भाग की रचना की।

[९७]आनन्द स्वामी, [९८]कवि प्रकाश, [९९]विदेह विद्यानन्द थे।
शास्त्रज्ञ [१००]प्रकाशवीर, सुधारस बरसाने के लिये ॥ ३० ॥

---

(९७) महात्मा आनन्द स्वामी (श्री खुशहाल चन्द आनन्द) महात्मा हंसराज के दक्षिण हस्त थे। निरन्तर प्रचार कार्य करते रहे। इनकी आनन्द गायत्री कथा अनेक भारतीय भाषाओं में तथा अंग्रेजी में प्रकाशित है। अन्य पुस्तकें महामन्त्र, एक ही रास्ता, प्रभुमिलन की राह, तत्वज्ञान, प्रभुभक्ति, मानव और मानवता आदि हैं।

(९८) श्री प्रकाशचन्द्र कविरत्न अच्छे संगीतज्ञ तथा उच्च कोटि के कवि थे, अनेक भजनों की पुस्तकें प्रकाशित कीं। अन्त में आप महर्षि के जीवन की मुख्य घटनाओं के पद्यानुवाद में लगे रहते थे।

(९९) स्वामी विद्यानन्द विदेह वेदों के मर्मज्ञ थे। अनेक वेदमंत्रों का सरल अनुवाद किया। गायत्री पुस्तक में प्रार्थना मंत्रों का संग्रह है। **The exposition of the Vedas** वेद व्याख्या ग्रन्थ प्रथम पुष्प का अंग्रेजी अनुवाद। वेदालोक में उनके मन्त्रार्थों का संग्रह है जो बड़ा उत्तम और आकर्षक है।

(१००) पं० प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य रहे। ज्वालापुर महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान रहे। राजनीति क्षेत्र में अच्छे नेताओं में गणना थी।

[101]हरिदत्त, [102]शंकरदेव, [103]अयोध्या परसाद विद्वान् थे ।
चितौड़ गुरुकुल आए [104]व्रतानन्द बनाने के लिये ॥३१॥
मन्तकीय, [105]विद्यानन्द, [106]देव प्रकाश, [107]रमेश चन्द्र भी ।
[108]सुखलाल वैदिक नाद आये थे गुंजाने के लिये ॥ ३२ ॥

---

(१०१) पं० हरिदत्त शास्त्री चतुर्दश तीर्थ गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक थे । वे आशुकवि थे । कई पुस्तकों के प्रणेता थे ।

(१०२) पं० शंकरदेव ऋषि दयानन्द प्रदर्शित पाठविधि के अनन्य भक्त थे तथा निष्ठावान् परिरक्षक थे । उसे क्रियान्वित करने वाले पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु और स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी थे । आपने सत्यार्थप्रकाश का संस्कृत अनुवाद रचा था जो मथुरा शताब्दी पर प्रकाशित हुआ था ।

(१०३) पं० अयोध्या प्रसाद Vedic Missionary थे । आर्य-समाज, कलकत्ता की ओर से प्रचारक थे ।

(१०४) स्वामी व्रतानन्द आर्षगुरुकुल चितौड़गढ़ के संस्थापक और संचालक थे । आप गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे । ऋषि दयानन्द के स्वप्न गुरुकुल चितौड़ गढ़ की स्थापना की पूर्ति के लिये आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया और अनेक विघ्न बाधाओं पर धैर्य पूर्वक विजय प्राप्त करके चितौड़ गुरुकुल की स्थापना की । ऋषि दयानन्द प्रदर्शित पाठ विधि के विशिष्ट संरक्षकों में से थे ।

(१०५) पं० विद्यानंद मंतकी पूर्ण विद्वान् प्रतिभावान् व्याख्याता तथा अद्भुत शास्त्रार्थ महारथी थे । आप तार्किक और प्रत्युत्पन्नमति थे । स्मरण शक्ति विलक्षण थी । काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर आप की व्याख्यान मुक्तावली पुस्तक प्रकाशित हुई थी ।

(१०६) पं० देवप्रकाश अमृतसरी अरबी फाजिल । आपने १९०८ में अमृतसर को अपना स्थायी निवास स्थान बनाया । आप शास्त्रार्थ समर के सूरमा नाम से विख्यात थे । भिन्न मजहब वालों से अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ किये ।

[१०७-१०८ की टि० आगे देखो]

थे [109]भीमसेन प्रसिद्ध, [110]अखिलानन्द, [111]सत्यानन्द भी।
आही गया भ्रम अन्त में पथ से डिगाने के लिये ।। ३३ ।।

भगवान वैदिक धर्म की जय हो सदा इस यज्ञ में।
अक्षर व्रती आते रहें आहुति लगाने के लिये ।। ३४ ।।

---

(१०७) आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री, विद्याभास्कर। डी. ए. वी. कालेज अजमेर में संस्कृत के वरिष्ठाध्यापक के पद से अवकाश प्राप्त किया। आप राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री रहे। आपकी लिखी हुई दयानन्द वाणी में महर्षि के छः ग्रन्थों में से ५६६ उद्धरणों का संग्रह है।

(१०८) कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर प्रसिद्ध गायक और वक्ता थे उर्दू, फारसी का अच्छा ज्ञान था। वहुत लम्बे समय तक भारत के कोने-कोने में वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे। उत्सवों में बहुधा उनको सब के [illegible] समय दिया जाता था श्रोता गण उठते नहीं थे किन्तु भाषण के अन्त तक बैठे रहते थे।

(१०९) पं० भीमसेन शर्मा महर्षि के लेखकों में से थे। उपनिषद् और गीता पर भाष्य प्रकाशित किया। अन्त में आर्यसमाज को छोड़कर सनातन धर्म में जा मिले।

(११०) पं० अखिलानंद संस्कृत के विद्वान् थे। धाराप्रवाह बोल सकते थे। दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य संस्कृत में लिखा। आर्यसमाज को छोड़कर सनातन धर्म में सम्मिलित हो गये।

(१११) स्वामी सत्यानन्द ने महर्षि की जीवनी। दयानंद-प्र[illegible] रचना की। अन्त में आर्यसमाज से अलग होकर राम नाम की [illegible] लगे थे। [illegible] रहे।

❀ ❀ ❀

नाम सूची

स्व० श्री अक्षर जी की फुटकर रचनाएं

ऋषि दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित चंद कविताएं

अन्य रचनाएं

(१)

विरजानंद जी सो विद्या पढ़न दयानंद आये ।
आयु वरस छःतीस, वरस छःतीस,
ब्रह्मचर्य तेजमय वदन, दयानंद आये ।
धारी कमर कोपीन, कमर कोपीन,
कर कमंडल अरु पद नगन, दयानंद आये ।
कुंजी वेद की पाने, वेद की पाने,
शिक्षा-निरुक्त-व्याकरण, दयानंद आये ।
'अक्षर' वरस ढाई के, वरस ढाई के,
लगभग कीनो अध्ययन, दयानंद आये ।

(२)

सेवा में आपको शिष्य दयानंद ढाड़ो ।
कर कृपा गुरुजी तुच्छ भेंट स्वीकारो ।।
मैं विद्योपार्जन हेतु शरण में आयो ।
कर अमित अनुग्रह मोकूं नाथ पढ़ायो ।।
कर श्री-चरणन में वास महासुख पायो ।
जो या समयै मो पै नहिं जात बतायो ।।
यह रोम--रोम प्रभु जी कृतज्ञ तिहारो ।। सेवा में०
मैं दीन हीन सब भांति सुनो महाराजा ।
नहीं वस्तु कोई है पास जा लाउत आजा ।।
पर गुरु दीक्षा प्राचीन नियम के काजा ।
लायो मैं थोड़ी लौंग देत लगे लाजा ।।
'अक्षर' आज्ञा देशाटन हेतु उचारो ।। सेवा में०

(३)

तेरी भेंट न ग्रहण करुंगो दयानन्द और कछू दै मोय।

दीन हीन भयो देश यह अपनो,
दुःख छाय गयो सुख भयो सपनो,
पर भारतवासी निद्रा में पड़े भये हैं सोय। तेरी०

मत अनेक भये यहं पै जारी,
घोर अविद्या जिन विस्तारी,
वेद-धर्म को प्रकाश करके अंधकार दै खोय। तेरी०

आर्य जाति निष्प्राण भई है,
महिमा सब प्राचीन गई है,
जीवन डारि, सुधार वारि से, सब दोषन कूं धोय। तेरी०

ऋषि शैली को प्रचार करियो,
वैदिक ग्रन्थन उभार धरियो,
जाते इनके पठन-पाठन में पुनः प्रवृत्ति होय। तेरी०

तर्क कसौटी कर मैं ले तू,
यही दक्षिणा मो कूं दै तू,
'अक्षर' प्यारे शिष्य न चाहूं, अन्य वस्तु मैं कोय। तेरी०

(४)

मोर समझ पितु बात न आवे, कैसे मूरति महेश जी।

शंकर तो सब जग के स्वामी,
करुणामय उर अन्तर्यामी
वाहन वृषभ तथा प्रियपत्नी गिरजा पुत्र गणेश जी।

पंडा और पुजारी सारे,
निद्रा के वश भये विचारे,
मैं केवल इक जागत रह गयो, अर्धरात रही शेष जी।

चूहो एक अचानक आयो,
बाने भोग लगो सब खायो,
पुनः डोलो 'अक्षर' प्रतिमा पै, भय नहीं खायो लेश जी।

श्री अक्षर जी द्वारा प्रदत्त

श्रद्धाञ्जलियां

(स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी)

पूज्य गुरु ज्ञानी महात्मा हंसराज।
दिव्य वरदानी, महात्मा हंसराज ॥
कर्मयोगी भावना निष्काम थी
ईश्वर प्रणिधानी, महात्मा हंसराज ॥
सत्यवादी, सत्यचारी थे तथा।
सत्य के मानी महात्मा हंसराज ॥
शिक्षा द्वारा नित्य फैलाते रहे।
वाच कल्याणी महात्मा हंसराज ॥
प्रिन्सीपल वर्षों रहे, हंस-हंस सही।
आर्थिक हानी, महात्मा हंसराज ॥
चाहते उन्नति सामाजिक आत्मिक।
सब की जिस्मानी, महात्मा हंसराज ॥
पीड़ितों को सदां पहुंचाते रहे।
मदद लाशानी महात्मा हंसराज ॥
गये विद्या हरित कर 'अक्षर' लगा।
धर्म का पानी महात्मा हंसराज ॥

(स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी जी)

ओम् अनुपमित बूटी चखा,
आनन्द स्वामी चल दिये ।
पथ कुशल, परिज्ञानी सखा,
आनन्द स्वामी चल दिये ॥१॥

श्री स्वामी नित्यानन्द ने,
गुरुमंत्र बचपन में दिया ।
उसको हृदय—पट पर लिखा,
आनन्द स्वामी चल दिये ॥२॥

श्रुति-धर्म ज्योति मिली,
महात्मा हंसराज प्रसाद से ।
विश्वार्यकरण व्रत रखा,
आनन्द स्वामी चल दिये ॥३॥

यह मन्त्र गायत्री कथा को,
प्रेम से कहते रहे ।
शुभ एक ही रास्ता दिखा,
आनन्द स्वामी चल दिये ॥४॥

कर खोज समझाया कि धन,
किसका तथा सब को बता ।
महिपत सुख का सु-नुसखा,
आनन्द स्वामी चल दिये ॥५॥

समभाव द्वारा योग के,
जा शत्रु से मांगी क्षमा ।
कर मित्र मधुमय द्विष लिखा,
आनन्द स्वामी चल दिये ॥६॥

किस भांति से ऋषि ऋण,
चुकाना आर्यों को चाहिये।
कर्त्तव्य पालन को सिखा,
आनन्द स्वामी चल दिये ॥७॥
प्रभु भक्ति 'अक्षर' सोमरस,
नव्वे छः वर्षों तब मिला।
फल अमरता का आप खा,
आनन्द स्वामी चल दिये ॥८॥

(स्वामी विद्यानन्द विदेह)

है व्याप्त कीर्ति विदेह विद्यानन्द स्वामी आपकी।
उपकारिता भूले न हैं जन वृन्द स्वामी आपकी ॥
सम्पर्क सौरभ से सुगन्धित व्यक्त्यनेकों हो गये।
वाणी मनोहर--मधुर थी समकन्द स्वामी आपकी ॥
पीयूष उपदेशीय सब ही को पिलाया प्रेम से।
प्रिय लेखनी चलती रही निर्द्वन्द्व स्वामी आपकी ॥
शुभ लक्ष्य--भाषा धर्म, संस्कृत--वेद फैले विश्व में।
थी स्वस्ति, पथ पर गति यथा रवि-चन्द स्वामी आपकी ॥
अति ज्ञान-कर्म प्रभाव से श्रद्धालु लाभान्वित हुए।
आलोचना होती रही स्वच्छन्द स्वामी आपकी ॥
विश्वास निश्चित विजय में, हारे निराशा से न थे।
बहु कार्य क्षमता थी समान गयन्द स्वामी आपकी ॥
अनुभव तथा वृत्तान्त निज अत्यन्त शिक्षाप्रद कहे।
गाथा सुप्रेरक-ललित जिम मकरन्द स्वामी आपकी ॥
भगवन् ! वेदालोक 'अक्षर' ज्योति दे संसार को।
हो न सविता मन्द शैली वन्द, स्वामी आपकी ॥

पं० रामचन्द्र देहलवी की स्मृति में

श्री० पं० रामचन्द्र जी देहलवी के प्रति,
सादर श्रद्धाञ्जलि है संश्रित प्रणाम से ।
ऐसा कौन आर्य होगा परिचित नहीं है जो,
उनके पवित्र यश और नामी नाम से ।
धर्म प्रचार उनका सर्वदा उद्देश्य रहा,
करते रहे सेवा कार्य भाव निष्काम से ।
महाशोक डुबाकर वियोग के सागर में,
कूंच परलोक किया दिल्ली आर्य धाम से ॥१॥

कौन कुरान पर कठिन प्रश्न पूछेगा,
कैसे आयतों को अब हम सुन पायेंगे ।
कौन बाइबिल वहु शंका उठावेगा,
कैसे विधर्मियों से समर जीत जायेंगे ।
कौन अवतारवाद को अब झकझोरेगा,
कैसे सप्तभंगी स्यादवाद छितरायेंगे ।
धार्मिक वाद व विवादों के अवसर पर,
पूज्य पं० जी सर्वदा हि याद आयेंगे ॥२॥

महर्षि सुशास्त्रार्थ किये थे अनेक ठौर,
वैदिक धर्म की धाक मन में विठाई थी ।
धर्मवीर पं० लेखराम जी ने भी आय,
प्राणों की वाजो इसी विषय में लगाई थी ।
स्वामी दर्शनानन्द जी ने भी यही कार्य किया,
विजय की पताका चहुदिग् फहराई थी ।

पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने भी टेक,
जीवन के अन्त तक उत्तम निभाई थी ॥३॥

वे तार्किक शिरोमणि थे विशद व्याख्याता थे,
विज्ञ वृहस्पति सुर पंडित स्वरूप थे।
सत्य के प्रकाशन में सदा कटिवद्ध रहे,
वाद समर के प्रति राम रघु भूप थे।
उपदेशक गणों के तारा मण्डल के वीच,
प्रतिभा प्रसारन में चन्द्र अनुरूप थे।
शंकाएं--निवारण में मधुर उच्चारण में,
शास्त्रार्थं महारथी देहलवी अनूप थे ॥४॥

आर्यसमाज

(१)

स्वर्णयुग ला फिर आर्य्यसमाज !

आर्य सत्य ही कहता ऐसी जावे धाक विराज ।
सब वल जांय प्रचारक उठते बैठें करते काज ।
होय नमस्ते चिह्न प्रति का सजे शान्ति के साज ।
नैतिकता का लोभ भंवर में डूबे नहीं जहाज ।
शोषन चोरी, रिश्वत खोरी का मिट जाय रिवाज ।
जीवन सरल आचरण सुन्दर रहे कहे की लाज ।
है मिल गया स्वराज्य शेष है अभी राम का राज्य ।।

(२)

पतित भयो पथ ते आर्यसमाज ।

वे रोगी है गये स्वयं जो आये करन इलाज ।
नायक जो सुधारवादिन के वे रुढी अधिराज ।
आर्य कहावे पर पौराणिक चिपटे रीति रिवाज ।
मृतक मूर्ति पूजा नहीं छूटी डट के रहो विराज ।
मांस तथा मदिरा त्यागन की है गई बन्द आवाज ।
लै बैठी सुप्रचार मूलधन संस्थावाद कुव्याज ।
सभा उत्तराधिकारिणी पै पड़ी शिथिलता गाज ।
भूल गये हम ऋषि ग्रन्थन को डावांडोल जहाज ।
मिल के चलें न बोलें मिल के मिलकें करे न काज ।
सत्य प्रेम ऋजुता सहिष्णुता आदिक गुण गये भाज ।।

(३)

आर्य समाजी--तब और अब।

वेदगती, प्रभु भक्ति--रती, यम नैम-वती सुमति जिन छाजी।
वर्ण किये गुण कर्म लिये, पुन आश्रम रीति पुरातन साजी।
प्रेम भरे उर में जग के हित साधन से सुविधा निज भाजी।
धाक जमी पहिले इतनी कह झूठ नहीं वह आर्यसमाजी॥

ईश्वर भक्त न वेद पढे उपदेश करे निस वासर ताजी।
वर्ण न आश्रम मान करें, हर बात विसे इन फट विराजी।
आर्य वनावन विश्व चहे पर पुत्र न हूं इनके मत साजी।
गाल वजावन में सकुचें नहि आज रहे अस आर्यसमाजी॥

कथनी और करनी

जव कहें वेद **संगच्छध्वं** हम अलग--अलग ही चलते हैं।
आपस में प्रेमाभाव लिये हम द्वेष अग्नि में जलते हैं॥
'भद्रं कर्णेभिः' पढ़ करके हम सुनें बुरी ही वातों को।
कटु वचन घृणा से सने हुए ही मुख से नित्य निकलते हैं॥
भूले **त्यक्तेन--भुञ्जीथा'** का पाठ पुरातन वेदों का।
धन--वटमारी, पद-लोलुपता से पग-पग पैर फिसलते हैं॥
कुछ असर नहीं **अग्ने नय सुपथा'** की सर्वोच्च्य प्रार्थना से।
जो कपट झूठ मक्कारी से हम निशिदिन जग को छलते हैं॥
है वेदादेश **'मनुर्भव'** से तो आशय ऊंचे जीवन का।
हम पशुओं से भी गिरे हुए होने पर नहीं संम्हलते हैं॥
हम **'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** वोल कर कहां आचरण करते हैं।
यदि नहीं चित्र प्रतिमा पूजन की प्रगति प्रवाह वदलते हैं॥

(५)

ऋषि यज्ञ यह बुझने पावे ना,
कोई आय आहुति दीजो ।

आर्यन् की यह फुलवारी, विकसित हो डारी डारी,
बिन प्रेम नीर कुम्हलावे ना । कोई०

वेदन की बंसी बाजे, सर्वावैदिकता भाजै,
कहु असत सत्य-विलगावे ना । कोई०

बालक होवें ब्रह्मचारी, पुन बने गृहस्थ्य व्रतधारी,
फिर हो त्यागी, सकुचावे ना । कोई०

सब शान्ति सुधा वरसावे, हो सुखी औ सुखी बनावे,
कर्त्तव्य पाल अलसावे ना । कोई०

चित्त-प्रसादन

मैत्री-करुणा-मुदितोपेक्षाणां, सुख-दुःख-पुण्या-पुण्य-विषयाणां भावनात् चित्तप्रसादनम् ।

देख सुखी नर कूं नहिं डाह, जरै उर में मित-भाव भरूं मैं ।
कष्ट लखुं पर के यदि कोउ, दया उमड़ाय विषाद हरूं मैं ।
पुण्य कहूं यदि दीख परै हरसूं हिय में अति मोद भरूं मैं ।
जो अपराध करें तिन ते रखि, भाव मलूक न वैर करूं मैं ।।

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

यज्ञोपवीत शुभ चिन्ह श्रेष्ठतम कर्मों का अतिपावन है।
यह सहज प्रशस्त प्रजापति से प्राचीन प्रथा मन भावन है ॥
सर्वोत्तम आयु सुवर्धक व्रत, इसको मैं धारण करता हूं।
हो उज्जवल ब्रह्मसूत्र द्वारा बल तेज भावना भरता हूं ॥

प्रातःसमय की प्रार्थना

ईश्वर है धन्यवाद तुझको, फिर आज प्रभात हुआ मेरा।
दिन भर उत्साहित मग्न रहूं, चिन्ता का नहीं बनू चेरा ॥
पालन कर्त्तव्य करूं अपना, हो सत्याश्रित जीवन--तेरा।
छीनूं मैं पर अधिकार नहीं, स्मरण रहे 'अक्षर' तेरा ॥

सोते समय की प्रार्थना

हे प्रभु ! गुणगान अनुग्रह का, क्या करुं बड़ा हूं आभारी।
देता मांगे विन सब मुझको, जिसका तू समझे अधिकारी ॥
दैनिक क्रियाएं बीत चलीं, लावे रजनी निद्रा प्यारी।
देखूं में स्वप्न मनोहर ही, क्षमियों अक्षर त्रुटियां सारी ॥

भोजन समय की प्रार्थना

यह रचा विश्व कैसा महान्, नप सका न कितने योजन है।
पाता है अद्भुत कण--कण में विज्ञान जो चलता खोजन है ॥
पालक तू कीड़ी कुञ्जर का, उपकृत जो नहीं सो को जन है।
'अक्षर है धन्यवाद तुझको, जो मुझे दिया यह भोजन है ॥

प्रार्थना

हमारी बुद्धियां युक्त रहें।

ओं सच्चिदानन्द, प्राण प्रिय व्यापक, दुःख दहें।
विश्व विधाता सविता का श्रुति सबसे श्रेष्ठ कहें।
भर्ग तेज जो दिव्य ज्योति है, वाकौ ध्यान गहें॥

असतो मा सद् गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा ऽमृतं गमय॥

असत् से ले चल सत् की ओर।
तमस् में दिखा ज्योति की कोर।
मृत्यु को दे अमृत में वोर॥

ईश्वर हमें सुपथ पर लावो।

असत् कुमार्ग त्याग करवा, हमें सत्य सन्मार्ग दिखाओ।
अन्धकार को परे हटा कर, हमको ज्योति स्वरूप दिखाओ।
मृत्युपाश से वचा कर, जीवन अमृत हमें पिलाओ॥

मातृवत् परदारेषु।
पर द्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु॥

देख पर नारी मातृ समान।
दूसरे का धन मिट्टी मान।
जीव सब अपने ही से जान॥

दाम्पत्य जीवन

पत्नी से भरतार, भार्या पति से राजी।
उस कुल में ध्रुव नित्य शान्ति समृद्धि विराजी ॥
नारी जहां प्रसन्न तीर्थ सम धाम वही है।
जहां न वह सन्तुष्ट वहां सुख नाम नहीं है।
जहां स्त्री सत्कार हो देव रमण के खेल हों।
मान न नारी का जहां, सभी क्रियाएं फल हों ॥

पत्नी

स्तुत्य, रमणयोग्य, स्वीकार करन योग्य,
तथा कमनीयों में हृदय की दुलारी हो।
चन्द्र सी वह आल्हादकारिणी, दिवाकर सी,
ज्योतिष्मती अखंड औ सच्चरित्र वारी हो।
विद्यानिपुण, सहनशील होवे भूमि जैसी,
वेद की विदुषी कभी मन से न न्यारी हो।
कर्त्तव्य कर्म विषय में परामर्श भर्ता को,
दैन हारी भाग्यवान् पुरुष की नारी हो ॥

भव्य भावना

मैंने जीवन का सोंप दिया, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
अब विजय तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में ॥१॥

निर्माता सकल सृष्टि के हो, तुम अखिल विश्व के त्राता हो ।
इस जग का महा–प्रलय में, हैं संहार तुम्हारे हाथों ॥२॥

बातें हो सुनते मन–मन की, कन–कन में वास तुम्हारा है ।
छिन–छिन का ज्ञान सदा तुमको, संसार तुम्हारे हाथों में ॥३॥

अज,अभय, सच्चिदानन्द, प्रभो ! तुम 'सत्यं-शिवं-सुन्दरम्' हो ।
मेरे अंङ्गों का युक्त करो, व्यापार, तुम्हारे हाथों में ॥४॥

वह भव सागर से पार हुआ, जिसके तुम नाव–खिवैया हो ।
मेरी छोटी सी नैया का, पतवार तुम्हारे हाथों में ॥५॥

जिस किसी वस्तु में सुख समझा, आखिर वह दुःखदाई निकली ।
लेनी है शरण तुम्हारे ही, उद्धार तुम्हारे हाथों में ॥६॥

हो मित्र–दृष्टि सब में मेरी, हर प्राणी मुझे मित्र दीखें ।
जन–जन से हो प्रिय, शुद्ध, सही, व्यवहार तुम्हारे हाथों में ॥७॥

जायें संकीर्ण भावनाएं, हो राज्य विशाल विचारों का ।
मिल वसुधाभर हो एक सुखी, परिवार, तुम्हारे हाथों में ॥८॥

प्रभु-प्रार्थना

प्रभु आप यज्ञ स्वरूप हो, दो यज्ञमय जीवन हमें,
यज्ञोपवीत है चिह्न जिसका, वह प्रचुर दो धन हमें ।

पूर्ण आयु प्रदान करिये कर्म से जो युक्त हो,
सब नहीं झपटे पराया लोभ से अति युक्त हो ।

पञ्च प्राणों में हमारे आपकी झनकार हो,
शक्तिशाली हम बनें उद्देश्य पर उपकार हो।

चक्षु हो नीरोग इनमें देखने की शक्ति हो,
आत्मवत् देखें सभी को कोई कैसा व्यक्ति हो।

श्रोत्र के द्वारा सुनें कल्याणकारी बात को,
नाम रसना से न तेरा हो अलग दिन--रात को।

हो वचन में सत्यता अति मधुरता परिपूर्ण हो,
दोष कटुता अनृतादिक का सदा ही चूर्ण हो।

शन्ति मन में हो हमारे जलें द्वेषानल नहीं,
वहै वारि विशालता का क्षुद्रता का मल नहीं।

प्रार्थना

सभी को दो सुबुद्धि भगवन्, सदा हो हित अनहित का ज्ञान।
ग्रसे आलस्य न सुकृति भानु, बुझे भीषण विद्वेष कृशानु।
न गावें व्यर्थ गर्व के गान, कृतघ्नी न हों भूल अहिसान।
मधुर अति निकले मुख से वानि, नहीं हो स्वार्थ हेतु परहानि।
अंहिसा के सब आयुध तान मचाने धर्मयुद्ध घमसान।
पञ्च असुरों से पाकर त्राण चरित्र-स्तर करदे निर्माण।
वड़ों को नित्य मिले सम्मान करें छोटों को प्रेम प्रदान।
खिले मानव का उर--उद्यान वसे होठों पर मृदु मुस्कान।
पराये सुख को निज सुख मान सु-सेवा करे विना अभिमान।
रहे जीवन में सत्य प्रधान, भाव हो शिवसंकल्प महान्।
शन्तिमय दो सुन्दर वरदान, हमारे गृह हो स्वर्ग समान।
दया तो कर दो कृपानिधान, विराजो मन मंदिर में आन॥

प्रार्थना

जिस समय दु:खी एवं अधीर हो जावे कभी हृदय मेरा।
हे दयानिधे ! मुझ पर करुणा की पावस झड़ी लगा देना ॥१॥

जब कभी चित्त होवे अशान्त, नीरसता आवे जीवन में।
तव शन्ति नाथ ! स्व-भक्ति भाव में मुझको आप रंगा देना ॥२॥

जव अन्त:करण उदास दीन होकर बैठा हो कोने में।
उत्साह दीनबन्धो ! मुझको तव देकर शोक भगा देना ॥३॥

जब निपट निराशा की रजनी का घोर अन्धेरा छा जाये।
तव जग--प्रकाश ! मेरे मन में आशा की किरण उगा देना ॥४॥

जव समझूं नित्य अनित्यों को जो वना सो नहीं विगड़ने का।
तव परमगुणे! अध्यात्म ज्ञान उर मेरे आप जगा देना ॥५॥

सर्वदा सुपथ पर चला करूं व्रतपते न मैं कर्त्तव्य तजूं।
ऐसे श्रद्धा विश्वास सुधा में मेरी बुद्धि पगा देना ॥६॥

धृति दया अंहिसा सत्य त्याग गुण-कहे सम्पदा देवी के।
आसुरी सम्पदा दम्भ दर्प अज्ञान अमर्ष दगा देना ॥७॥

यह जगत् मुसाफिर खाना है 'अक्षर' आना है जाना है।
हो सावधान, मत पांच ठगों से निज को कहीं ठगा देना ॥८॥

प्रार्थना

पार उसने किया शीघ्र भवसिन्धु को,
लीं जिस ने पिता जी ! तुम्हारी शरण।
छाया अमृत तुम्हारी निसन्देह है,
लाय आप की दूरी निश्चय मरण।
तुम निराधार सब ही के आधार हो,
न्यायकारी, निरञ्जन, निराकार हो।
सर्वव्यापक, सुखद, सृष्टि करतार हो,
नित्य करते सभी का पोषण भरण।
जब समय अति कठिनता का सिर पर पड़ा,
आया कैसा ही कष्ट किसी को कड़ा।
हुआ आकर सहारा तुम्हारा खड़ा,
याद करते ही तुमको संकटहरण।

चेतावनी

भले काम करता चल जानन, अन्त एक दिन आयेगा।
कालबली से बचा न कोई, तुझे नहीं क्या खायेगा ।।
नेक कमाई करले बन्दे संग न कुछ जाने वाला,
आया था तू मुट्ठी बांधे हाथ पसारे जायेगा ।।
होती है जैसी करनी फिर वैसी भरनी होती है,
जो कुछ जैसा भी बोयेगा वैसी उपज उगायेगा ।।
ईश्वर की है सृष्टि यहां पर सबसे हिलमिल रहना है,
मार बुरी खायेगा निश्चय जा यदि कभी सतायेगा ।।
भूत अतीत गया हाथों से क्या है आश भविष्यत् की,
खोयेगा यदि वर्त्तमान को हीरा जन्म गंवायेगा ।।
सुन्दर ही उसका यह प्रसाद मिलता है ब्रह्मानंद सदा,
जो गहरा रंगा भक्ति रंग में वह परम शांति को पायेगा ।।

आपस के सम्बन्ध न टूटें ॥
मित्र बनें तो जीवन भर के, अधवर प्रेम कलश नहि फूटे ।
दम्पति सुखी रहे निशवासर, पति पत्नी के हाथ न छूटें ।
स्वामी सेवक मिलें परस्पर, एक दूसरे कूं नहि लूटें ।
राजपुरुष दुःशासन बन के, खीचें नहीं प्रजा पर जूटें ।
भाई वन्धु बंधे पर हित में, द्वेषानल से वक्ष न कूटें ।
मात पिता के सन्तति वश हो, प्यावें नहीं क्लेश की घूटें ।
शिष्यन पै गुरुजन के द्वारा, 'अक्षर' द्वार ज्ञान के खूटें ॥

सुगम और कठिन

सुगम पतन, उत्थान कठिन है ।
सुगम अपव्यय है निजधन का, किन्तु पात्र को दान कठिन है ।
सुगम शत्रुता का है कर लेना, सुमित्रता निर्माण कठिन है ।
सुगम क्रोध है तुच्छ वात पर, सहना पर अपमान कठिन है ।
सुगम वड़ा व्यवहार असत का, सत्याधारित आन कठिन है ।
सुगम हलाहल कटु वचनों का, प्रेम सुधारस पान कठिन है ।
सुगम सताना है निर्बल का, परहित देना प्राण कठिन है ।
सुगम सदा चिन्तन माया का, ईश्वर का पर ध्यान कठिन है ।
सुगम हर्ष का सुख में होना, पर दुःख में मुस्कान कठिन है ।
सुगम कूंच रो-रो कर करना, हंस-हंस कर प्रस्थान कठिन है ।
सुगम वड़ी है परालोचना, करना स्वयं महान् कठिन है ।
सुगम गीत वैमनस्यता का, किन्तु एकता गान कठिन है ।

मानव-धर्म

दश कहे धर्म के लक्षण जो, उनको हम सब अपनायेंगे ।
हम स्वयं श्रेष्ठ बन कर के ही, अन्यों को श्रेष्ठ बनायेंगे ॥१॥
हम धृति को नित धारण करके, हर कार्य करेंगे धीरज से ।
हम धैर्य कभी नहिं खोयेंगे, नहिं हो अधीर घबड़ायेंगे ॥२॥
हम क्षमा सर्वदा धारण कर, भूलेंगे पर की त्रुटियों को ।
हम दया करेंगे दुखियों पर, निर्बल को नहीं सतायेंगे ॥३॥
हम दमन करेंगे वृतियों को, मन रहे सु-सारथि-वत् अपना ।
यह शिवसंकल्प युक्त होगा, तो कार्य सभी बन जायेंगे ॥४॥
अस्तेय ले लिया व्रत हमने, नहि हरें पराई वस्तु कभी ।
ईश्वर को व्यापक जान सदा, पर धन को नहीं हर लायेंगे ॥५॥
हम मन की शुचिता करके ही, फिर शुद्ध बनायेंगे तन को ।
जिह्वा को रक्खेंगे पवित्र, धन भी हम विमल कमायेंगे ॥६॥
इन्द्रियां सभी हों निगृहीत हम भद्र सुनेंगे कानों से ।
आंखों से भद्र देख कर ही हम मानव शिष्ट कहायेंगे ॥७॥
हम बुद्धिपूर्वक कार्य करेंगे, नहीं द्रव्य मादक लेंगे ।
हम 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अग्ने नय सुपथा गायेंगे ॥८॥
हम 'विद्या या सा विमुच्यते' का पाठ पढ़ेंगे निश दिन ही ।
अति ज्ञान और विज्ञान प्राप्त कर जीवन सफल बनायेंगे ॥९॥
हम सत्य मान कर सत्य वचन, कह सत्य करेंगे कार्य सभी ।
पायेंगे सत्य स्वरूप तभी जब अनृत से हट जायेंगे ॥१०॥
हम क्रोधित होकर कभी, सन्तुलन नहीं बिगाड़ेंगे मन का ।
हम शान्ति पूर्वक सोचेंगे निज रक्त न व्यर्थ जलायेंगे ॥११॥
जो करें धर्म की रक्षा उनकी धर्म सुरक्षा करता है ।
'अक्षर' कर्त्तव्य न भूलेंगे, नहीं जीवन व्यर्थ गंवायेंगे ॥१२॥

प्रार्थना

मस्तक में सदा विवेक रहे, सन्तुलन क्रोध से नहीं जावे।
उर उदारता की टेक रहे, नहि लोभ वृत्ति आने पावे।
हो नाभि चक्र संयमित कभी, नहि काम अग्नि को भड़कावे।
द्यौ, अन्तरिक्ष, भू लोक सभी, की 'अक्षर' शान्ति हमें आवे॥

——

प्रयाण

केवल तेरा ही ध्यान रहे, जब भी प्रयाण की वेला हो।
होठों पर मृदु मुस्कान रहे, जब भी प्रयाण की वेला हो॥

वेदादि सभी सद्ग्रन्थों की, ऋषि-मुनि योगी प्रिय पन्थों की।
वाणी गुंजन कान रहे, जब भी प्रयाण की वेला हो॥

उर दहन न मत्सर द्वेष रचें, छल कपट तनिक नहि शेष बचें।
नहि व्यर्थ ऐंठ अभिमान रहे, जब भी प्रयाण की वेला हो॥

तन मन की शुचिता बनी रहे, मख-सुमन सुगन्धित वायु वहे।
अति विमल रम्य सुस्थान रहे, जब भी प्रयाण की वेला हो॥

संकट परिवार विछोह न हो, धन सम्पत्ति का कुछ मोह न हो।
दृढ पथिक भाव हर आन रहे, जब भी प्रयाण की वेला हो॥

जब बुझने जीवन दीप लगे, अरु प्राण पखेरु जाये भगे।
मुख लिये ओम् प्रस्थान रहे, जब भी प्रयाण की वेला हो॥

——

चेतावनी

कौन ही जाने यहां से, तू कहां को जायेगा।
मार्ग का पाथेय हालों हाल कैसे पायगा ॥१॥
तू सदा गाता रहा है गीत माया मोह के।
अन्त में भगवान् का तू नाम कैसे पायगा ॥२॥
यज्ञ की ही भावना से कर्म ही तेरे सभी।
शुद्ध हाथों से भने ही अन्न को तू खायेगा ॥३॥
दूसरों के काम आना ही सदा कर्त्तव्य है।
त्याग जो तूने किया तो शान्ति भारी पायेगा ॥४॥
पा लिया एकत्व तूने देख प्राणी मात्र में।
तो किसी भी भाँति अत्याचार कैसे ढायगा ॥५॥
आम पाने के लिये तू आम्र वृक्षों को लगा।
आम पौदा आम की बौरी कहाँ से लायगा ॥६॥
तू वही आचार औरों से किये जा प्रेम का।
अन्य का वर्त्ताव तेरे से तुझे जो पायगा ॥७॥
आयु विद्या शक्ति औ सम्मान पायेगा सदा।
नित्य श्रद्धा से वड़ों को शीश जो तू नायगा ॥८॥
तू कृपा का पात्र होगा ईश का संसार में।
जो दुःखी की शीघ्र सेवा के लिये तू धायगा ॥९॥

शांति पाठ

सभी गाओ मंगलाचार, आज शुभ अवसर है।
द्यौ में है शांति, अन्तरिक्ष में शांति, पृथ्वी में शान्ति की धार। आज०
जल में है शांति, औषधि में शान्ति, वनस्पति में शान्ति आगार। आज
देवों में शान्ति, वेदों में शान्ति, सब ही में शान्ति का सार। आज०
शान्ति ही में शान्ति, हमें मिले शान्ति मिल बोलो शान्ति त्रय वार।
·· आज शुभ अवसर है।

शिवसंकल्प

जो चलता है जब तक जागे, जो सोतो में कोसों भागे ।
जो सभी ज्योतियों में आगे, वह मन सुविचारों वाला हो ॥१॥

ऋषि मुनि विद्वान् कर्मयोगी, बन धीर यज्ञमय निर्भोगी ।
जिससे हो निर्भय नीरोगी, वह मन सुविचारों वाला हो ॥२॥

प्रज्ञान चेत धृति--शाला है, भीतर का दिव्य उजाला है ।
जो कर्म--क्षेत्र का आला है, वह मन सुविचारों वाला हो ॥३॥

जिससे ही तीनों कालों में, भरता सातों तन सालों में ।
अमृत जैसे शुभ प्यालों में, वह मन सुविचारों वाला हो ॥४॥

ऋक्, साम, यजुर् जिसने जाने, विज्ञान अथर्वन् अनुमाने ।
जिससे सब सोचें पहिचानें, वह मन सुविचारों वाला हो ॥५॥

होके सारथि ज्यों घोड़ों को, गति देता अंगों जोड़ों को ।
बल जिसका मालूम थोड़ों को, वह मन सुविचारों वाला हो ॥६॥

निष्पाप मन

सम्पति का कोष कमाऊं, चाहे सर्वस्व गवाऊं,
सुख हो या दुःख उठाऊं, जुग जिऊं अभी मर जाऊं ।
नगरी का नागर बनूं वसूं या वन में,
पर पाप न आवे, हे प्रभु मेरे मन में ॥१॥

परिवार भले ही छोड़े, प्रिय पत्नी नाता तोड़े,
मुंह सन्तति क्यों न मरोडें, शासन सब तीत निचोड़ें ।
कष्टों का कोप रहे कितना ही तन में,
पर पाप न आवे, हे प्रभु मेरे मन में ॥२॥

दुःखियों का दुःख विदारुं, पतितों पर प्रेम पसारुं,
बल सदा सत्य का धारुं, बन वीर न हिम्मत हारुं ।
हो जरा जीर्ण तन में, या उमंग यौवन में,
पर पाप न आवे, हे प्रभु मेरे मन में ॥३॥
अन्याय अनीति मिटाऊं, सेवा सन्मार्ग सुझाऊं,
सद्भाव सुधा वरसाऊं, समता सुनीति सरसाऊं ।
यश हो या अपयश, मिले मुझे जीवन में,
पर पाप न आवे, हे प्रभु मेरे मन में ॥४॥

तू चल दे आप अकेला ही

यदि सुन कर तेरी तीव्र टेर, तुझ से मुख लेते सभी फेर ।
कस कमर नहीं कुछ लगा देर, तू चलदे आप अकेला ही ॥१॥
यदि कोई आता नहीं साथ, नहिं देता है सहयोग हाथ ।
मन सुमरन कर विश्वनाथ, तू चल दे आप अकेला हीं ॥२॥
यदि मार्ग कठिन है शल्य पूर्ण, कोई सहाय नहीं करे तूर्ण ।
वाधाएं करता हुआ चूर्ण, तू चल दे आप अकेला ही ॥३॥
यदि निशतम मेघाव्रत आकाश, नहिं कोई दिखलाता प्रकाश ।
साहस करके मत हो निराश, तू चलदे आप अकेला ही ॥४॥
एकाकी चलता मार्तण्ड, विद्युत एकाकी अति प्रचण्ड ।
मारुत वल एकाकी अखण्ड, तू चल दे आप अकेला ही ॥५॥

प्रार्थना

(१)

हम जैसे दीन पार उतारे न जायंगे।
तो आप दीनबन्धु पुकारे न जायंगे ॥

उज्ज्वल चरित्र कैसे होवेंगे हमारे।
हृदय से मैल जब कि हमारे न जायंगे ॥

निष्काम सेवा किस तरह हो पायगी कभी।
यदि स्वार्थभाव हमसे विसारे न जायंगे ॥

अपराध अपने देख जब लेंगे हम स्वयम्।
औरों के दोष हमसे निहारे न जायंगे ॥

कोई भी वस्तु स्थिर नहीं, जग अनित्य है।
कहां तक कि हम, हमारे दुलारे न जायंगे ॥

क्योंकर सुधार कार्य बनेंगे समाज के।
यदि कर्म अपने-अपने सुधारे न जायंगे ॥

आपस में लड़ झगड़ हम मिट जायंगे सभी।
परिणाम फूट के जो विचारे न जायंगे ॥

कैसे सफलता पायेंगे जीवन में हम भला।
'अक्षर' जो धर्म के सहारे न जायंगे ॥

---

(२)

सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य कर्म हो।
वेद शास्त्र स्वाध्याय--श्रवण निज परम धर्म हो ॥

मार्ग अधर्माचरण न हो मन वश में रखना।
इन्द्रिय निग्रह कर निषिद्ध को कभी न चखना ॥

क्रोध आदि को त्याग शान्ति से मन को भरना।
विद्या का अभ्यास स्वयं कर उन्नति करना ॥

सत्पुरुषों का संग सदा तुम करते रहना।
पालन निज कर्त्तव्य हेतु कष्टों को सहना ॥

नियमित जीवन से सदा रहता आरोग्य है।
करना ईश्वर उपासना ही नित्य योग्य है ॥

(३)

उसी का है सच्चा अभिमान।

जो रखता है सदा स्वच्छता अन्तर्बाह्य समान।

सत्य कहे वह करे सत्य ही उसे सत्य सम्मान।

बहा स्नेह की सरिता देता जीवमात्र को मान।

संयम का उसके कर सकता पापी क्या अनुमान।

है करता सेवा सबकी बिन काल देश परिमान।

स्वाध्यायी भीतर बाहर का उसको धर्म प्रमान ॥

सांचो सुख

(१)

है सांचो सुख शरण तिहारी ।

पेट भरन में वह सुख नाहीं, जो देवै में क्षुधित भिखारी ।
निज सुविधा में वह सुख नाहीं, जो सुख है पर कष्ट निवारी ॥
सेवित है के वह सुख नाहीं, जो सुख पावे सेवा कारी॥
नहीं अधिकार प्राप्त पै वह सुख, जो सुख ले कर्त्तव्य पुजारी ।
इच्छा वृद्धि नहीं सुख देवे, जो सुख है सन्तोष मंझारी ।
'अक्षर' सुख वह कहां भोग में, जो सुख मिले त्याग में भारी ॥

---

(२)

ईश्वरानन्त अनादि अनूप उसी की पूजा करनी योग्य ।
सच्चिदानन्द विशुद्धस्वरूप उसी की पूजा करनी योग्य ।
न्यायकारी, दयालु अशरीर उसी की पूजा करनी योग्य ।
सर्वव्यापक, अविकारी धीर उसी की पूजा करनी योग्य ।
सर्व-वल-युक्त नित्य आधार उसी की पूजा करनी योग्य ।
सर्वेश्वर अन्तर्यामी अपार उसी की पूजा करनी योग्य ।
अक्षर, अज, अमर, अभय अभिराम उसी की पूजा करनी योग्य ।
सृष्टि कर्त्ता—आदिक हैं नाम, उसी की पूजा करनी योग्य ॥

प्रभु भक्त

प्रभु भक्त वही जिसके उर में पर दुःख विवाद बढ़ाता है।
पर कष्ट निवारण में रत है मन में अभिमान न लाता है।।
जन सेवक हो सत्कार्य्य करे पर निन्दा से कतराता है।
मन वाच शरीर सुनिश्चल है जननी निज धन्य कहाता है।।
सम भाव हुआ ममता तजदी पर नारि लखे जिय माता है।
मुख से कुछ भी न असत्य कहे, पर द्रव्य न हाथ लगाता है।।

प्रार्थना

भगवान् दयालु कृपानिधि हैं दया आप करेंगे कभी न कभी।
आधार श्रद्धालु के सब विधि हैं सन्ताप हरेंगे कभी न कभी।
जो शरण प्रभु की आयेंगे, वे शाश्वत सुख को पायेंगे।
भवसिन्धु पार हो जायेंगे, त्रि-ताप हरेंगे कभी न कभी।
वैरी श्वन् कोक उलूक यहीं, है गृध सुपर्ण शुशलूक कहीं।
भीतर से जो कि मलूक नहीं, मन पाप मरेंगे कभी न कभी।
परिवर्तन शील जमाना है, कल नया सो आज पुराना है।
वालों में नीर सुखाना है, सो धाप भरेंगे कभी न कभी।
यह दुनियां रैन वसेरा है, क्यों करता मेरा तेरा है।
कब उखड़े 'अक्षर' डेरा है, यम थाप पड़ेंगे कभी न कभी।।

करना ठीक काम

ओम् अनादि अनन्त अक्षर अनवतारी है वही ।
करतार, करुणामय, कृपालु व कष्टहारी हैं वही ।
निराकार निशंक निर्भय, न्यायकारी है वही ।
सर्वव्यापक सच्चिदानंद सर्वधारी हैं वही ।
उसी से हरवा के अपने ताप, करना ठीक काम ।
धार कर विश्वास प्रभु में आप करना ठीक काम ।।१।।

सभी को जाना यहां से, नहिं सदा रहना कभी ।
कष्ट मत देना, न अत्याचार ही सहना कभी ।
मत बुरा कुछ पीठ पीछे अन्य को कहना कभी ।
ईर्ष्या की अग्नि में मत हृदय को दहना कभी ।
दूर अपने से हो रखकर पाप, करना ठीक काम ।
धार कर विश्वास प्रभु में आप करना ठीक काम ।।२।।

चिन्तित न होना मान हो अथवा कहीं अपमान हो ।
विचलित न होना लाभ के स्थान में नुकसान हो ।
शोकित न होना आज ही संसार से प्रस्थान हो ।
संशित न होना कर्मफल के विषय में नादान हो ।
कर्त्तव्य पालन की लगा कर छाप करना ठीक काम ।
धार कर विश्वास प्रभु में आप करना ठीक काम ।।३।।

आये हंसने के लिये हो आप रोने को नहीं ।
समय का उपयोग करने आयु खोने को नहीं ।
ले विजय माला, पराजित कभी होने को नहीं ।
प्रेम तरु को ही लगाने, फूट बोने को नहीं ।
स्वयं अन्तःकरण का कर माप, करना ठीक काम ।
धार का विश्वास प्रभु में आप करना ठीक काम ।।४।।

हम सबही के सबहि हमारे।

(१)

एक पिता की सब संतति है का गोरे का कारे।
सूरज को प्रकाश सब ही कूं सब पैं, चमकें तारे।
वर्षा में जब मेघ घिरत हैं घर घर बहें पनारे।
जनम मरन के मारग सबके हैं समान नहीं न्यारे।
किन अपनन सो वैर करे अरु किन कूं समझें प्यारे।
ईश्वर की महिमा कण-कण में देखें आंखिन वारे।
'अक्षर' उसका भेद न पायो, ऋषि मुनि योगी हारे॥

(२)

मन कह दूं बात सारी यदि तू बुरा न माने।
होता है सत्य खारी यदि तू बुरा न माने॥
अन्यों के गुणों को तू नहीं देखता कभी भी।
छिद्रान्वेषी भारी यदि तू बुरा न माने॥
तेरा है यत्न तुझको सब धर्मनिष्ठ जाने।
है दुष्ट दुराचारी यदि तू बुरा न माने॥
वैभव को दूसरों के, तू देखकर है कुढता।
तू स्वार्थ का पुजारी यदि तू बुरा न माने॥
औरों के कष्ट की तुझको नहीं है चिन्ता।
तू ही रहे सुखारी यदि तू बुरा न माने॥
सन्मुख तू चाटता है चरणों को दूसरो के।
पीछे निकाले गारी यदि तू बुरा न माने॥
धर्मोपदेश देता फिरता है दूसरों को।
तू स्वयं अनर्थकारी यदि तू बुरा न माने॥

प्रार्थना

भूः जीवन के आधार प्रभो, शिर मेरा सदा पवित्र रहे।
जीवन में हो उपकार; प्रभो अति प्रबल प्रशस्त चरित्र रहे ।।१।।

हो भुवः दुःख हरने वाले ज्ञानेन्द्रिय नेत्र पवित्र रहे।
सुदृष्टि सदा सब पर डाले, दैवीगुण क्षेत्र पवित्र रहे ।।२।

स्वः सुख आनन्दागार कहे यह मेरा कण्ठ पवित्र रहे।
मृदु सत्य कहूं सुख धार वहे उदात्त अखण्ठ चरित्र रहे ।।३।।

महः तुमसा कहीं महान् नहीं यह मेरा हृदय पवित्र रहे।
हो महानता अभिमान नहीं निर्दोषी अभय चरित्र रहे।।४।।

तुम जनः जगत के कर्त्ता हो यह नाभि उपस्थ पवित्र रहे।
संयम विकार का हर्त्ता हो शुच सुन्दर स्वस्थ चरित्र रहे।।५।।

तुम तपः बड़े तपकारी हो यह पाद प्रबुद्ध पवित्र रहे।
मुझे सहनशीलता भारी हो, उपकारी शुद्ध चरित्र रहे।।६।।

तुम सत्यं सत्य स्वरूप कहे यह मस्तक सदा पवित्र रहे।
मन में सुसत्य की धार वहे उत्तम सर्वदा चरित्र रहे ।।७।।

देव ब्रह्म, प्रभो ! सुव्यापक हो, इन्द्रिय प्रत्येक पवित्र रहे।
शुचिता ही सुख की प्रापक हो 'अक्षर' सविवेक चरित्र रहे ।।८।।

फिर यत्न करो, फिर यत्न करो।

यदि प्रथम वार नहीं सफल हुए, उद्योग किसी विध विफल हुए।
क्यों व्यर्थ शोक से विकल हुए, फिर यत्न करो, फिर यत्न करो॥
वह गिर सकता जो चढता है, गिर कर भी आगे वढ़ता है।
पुरुषार्थ भाग्य को गढता है, फिर यत्न करो फिर यत्न करो॥
भय संशय रखना पास नहीं, तजना श्रद्धा विश्वास नहीं।
कव फले प्रशस्त प्रयास नहीं, फिर यत्न करो फिर यत्न करो॥
संसिद्ध परिश्रम ही लाता, अभ्यास मनोरथ का दाता।
रस्सी से पत्थर घिस जाता, फिर यत्न करो, फिर यत्न करो॥
कृत जिसके दक्षिण हस्त रहा, वायें में जय को सदा गहा।
कर्मों में कौशल योग कहा, फिर यत्न करो फिर यत्न करो॥

कर्त्तव्य

बहद् सत्य वह ही है जिसमें, निहित भलाई सवकी हो।
थोड़ों का हित अल्प सत्य है, इसका करना योग्य नहीं॥१॥
कठोरता से नियम पालना, शुभ कर्त्तव्य हमारा है।
पर अनुशासन हीन भावना, मन में भरना योग्य नहीं॥२॥
दृढ संकल्प परम आवश्यक है उद्देश्य पूर्णता को।
निरुत्साहित होकर के जगती में मरना योग्य नहीं॥३॥
विना परिश्रम के कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता।
अकर्मण्यता आलस द्वारा श्रम से डरना योग्य नहीं॥४॥
बुद्धि पूर्वक कार्य किया तो निश्चय विजय हमारी है।
अनाधुन्ध कर कर्म सदा पछताना वरना योग्य नहीं॥५॥
कोई भी निर्माण संगठन विना असंभव होना है।
अतः द्वेष का भाव हृदय में हमको धरना योग्य नहीं॥६॥

तेजोऽसि

भगवान् तेज स्वरूप हो, भर तेज से उराकाश दो ।
तुम दिव्य ज्योति अनूप हो, तम में प्रवोध प्रकाश दो ॥१॥

तुम वीर्यवान् महान् हो, प्रभु ! भावनायें वीर दो ।
मस्तिष्क में धावन् हो, नीरोग स्वस्थ शरीर दो ॥२॥

तुम विश्व बल आधार हो, जगदीश बल का दान दो ।
प्रिय सत्य का व्यवहार हो, कर्त्तव्य का परिज्ञान दो ॥३॥

तुम ओज के आगार हो, अखिलेश अतिशय ओज दो ।
हर हृदय वृति उदार हो, मन जिम प्रफुल्ल सरोज दो ॥४॥

तुम मन्यु सागर हो पिता अन्याय के प्रति मन्यु दो ।
उत्साह साहस अभयता ध्रुवता सदा जग--जन्यु दो ॥५॥

तुम सह--सहिष्णु वि शष्ट हो, 'अक्षर' सहन की शक्ति दो ।
शत वर्ष कम ही इष्ट हो, पुरुषार्थ में अनुरक्ति दो ॥६॥

भद्रं कर्णेभिः

कान के द्वारा सदा हम भद्र ही सुनते रहें ।
झूठ कपट त्याग कर हम सत्य मार्ग चुनते रहे ॥

आंख से हो दृष्टिगोचर भद्र ही हमको सदा ।
सर्व-उन्नति में समुन्नति में स्वयं की गुनते रहें ॥

जीभ पर हो भद्र वाणी एक तेरे नाम की ।
बीज बो सद्भावना के प्रेम फल लुनते रहें ॥

मानवता का मान

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥
गीता अध्याय १२ श्लोक १३-१४॥

मान मानवता सुख आधार, कर नहीं कभी द्वेष व्यवहार ।
मित्र सबका निज धर्म सचेत, सभी का हित उसको अभिप्रेत ।
अन्य का देख कष्ट--सन्ताप, द्रवित करुणा से होता आप ।
न ममता अहंकार का लेश, नम्रता उसमें रहे विशेष ।
दुःख सुख का नहीं प्रकट प्रभाव सर्वदा रहता है समभाव ।
किसी से हो उसको यदि हानि, क्षमा करता नहिं करता ग्लानि ।
सदा वह रहता है सन्तुष्ट, न होता है अप्रिय से रुष्ट ।
चाहता अपने प्रिय जो कार्य, वही समझे परहित अनिवार्य ।
न संयम मर्यादा का भंग, कभी हो आता विजय के संग ।
युक्त निष्ठा से श्रद्धावान्, रहे ध्रुव दृढ निश्चय को ठान ।
मुझे अर्पण करता मन-बुद्धि, वही पाता है अन्तःशुद्धि ।
व्यक्ति जो उक्त गुणों से युक्त, भक्त प्रिय 'अक्षर' जीवन मुक्त ॥

———

बुराई न कर

बुराई न कर यदि भला चाहता है,
न वो बेत जो तरु फला चाहता है।
किसी की न गर्दन पर धर तू छुरी को,
बचाना जो अपना गला चाहता है।
वही द्वेष क्रोधादि को प्राप्त होगा,
विना अग्नि के जो जला चाहता है।
उसे झेलने घोर संकट पड़ेंगे,
सदा सत्यपंथ जो चला चाहता है।
भले कार्य अनिवार्य उपकार कर तू;
घड़ी चार जीवन ढला चाहता है।
गिराने को मत खोद कूआ किसी को,
न खाई जो तू ढला चाहता है।
किये जा तू अक्षर सुकर्त्तव्य पालन,
न जो अन्त में कर मला चाहता है।

मन की शिकायत

भजन विना यह मन अभिमानी।

झूठी ऐंठ अकड़ में डोले गुरुता नहीं समानी।
चंचल जागत में भागत है, सोवत में सैलानी।
तनिक बात पै रोष करत है राखे खुनस पुरानी।
देख पराई बढ़ती कुढ़िये, जैसे मुञ्ज जरानी।
भूल नहीं यह अपनी निरखे गलती लखे बिरानी।
विना त्याग नहीं शान्ति अनन्तर कैसे बुद्धि सठानी।
अत्र करुणा करुणाकर होवे, 'अक्षर' आयु सिरानी।

जीवन ज्योति

जीवन ज्योति जगादो स्वामी ।

ओ३म् सच्चिदानन्द स्वयं भ निराकार अज अन्तर्यामी ।
असत् मार्ग से मुझे बचा कर करो सत्यपथ का अनुगामी ।
अन्धकार से मुझे हटा कर दो प्रकाश दिव्यपरिणामी ।
मृत्यु पाश से मुझे छुडा कर, अमृत पद देना अभिरामी ।

वृथा जीवन

मन सदा सत्य से धोया कर, अन्यथा वृथा जीवन तेरा ।
तू उर में तथ्य विलोया कर, अन्यथा वृथा जीवन तेरा ।।
क्षण क्षण मिलकर है आयु बनी कीमत क्षण की अतएव घनी ।
नहिं समय अकारथ खोया कर अन्यथा वृथा जीवन तेरा ।।
है द्वेष-घृणा का भाव बुरा, अपने अनहित का जान छुरा ।
चिन्ता की नींद न सोया कर अन्यथा वृथा जीवन तेरा ।।
क्रोधित होकर मत रवत जला, सब के हित में निज जान भला ।
माला तू प्रेम पिरोया कर, अन्यथा वृथा जीवन तेरा ।।
तू इस शरीर को क्षेत्र जान, है जीव भोग वाला किसान ।
सत्कर्मों को ही बोया कर, अन्यथा वृथा जीवन तेरा ।।
हम वसन तजे जो गदले हैं, वैसे ही चोले बदले हैं ।
मत मरण सोच से रोया कर, अन्यथा वृथा जीवन तेरा ।।
दो दिन का यहां बसेरा हैं, क्यों करता मेरा तेरा है ।
अपयश का बोझ न ढोया कर, अन्यथा वृथा जीवन तेरा ।।
अति सरल शुद्ध व्यवहार रहे, सात्विक श्रम-प्राप्ताहार रहे ।
परहित में स्वार्थ डवोया कर, अन्यथा वृथा जीवन तेरा ।।

(२)

होती है घृणा, घृणा से ही, विद्वेष द्वेष को उपजाता,
यदि मधुर वचन नहिं देने को, कटु बोल हलाहल पिला नहीं।

यद्यपि असि--घात्र पुराना है, वाणी की ठेस नहीं जाती,
पट फटा हुआ पुन जुड़ जाता, मन फटा हुआ तो सिला नहीं।

लेकर उद्देश्य विशेष किया, ईश्वर ने जग की रचना को,
कण--कण में गुप्त रहस्य भरा, है व्यर्थ पुष्प भी खिला नहीं।

सुमरन करता रहे नाम सार, हो जावेगा भव सिन्धु पार,
सम्भव है तुझ से यह प्रहार, आखिरी मृत्यु का झिला नहीं।

साथी हैं वनी वनी के सब, विगड़ी का कोई मिला नहीं,
मतलव की जब दुनियादारी, फिर हमें किसी से गिला नहीं।

यह दुनिया शक्ति, पुजारी हैं, निर्बलता का नहिं है ठौर यहां,
रवि उदित अर्घ्य-अंजिल पाता, कर कभी अस्त को हिला नहीं।

गौ बैलों को बूढे पन में सेवा का फल वध मिलता हैं,
है हृदय नहीं वह पत्थर है जो इस कृतघ्नता से छिला नहीं।

फूलों वृक्षों पर ही प्रमोद पक्षीगण कर सुषमा भरते,
पतझड़ में उपवन की शोभा पर कोई सकता दिला नहीं।

रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित वा प्रसारित प्रामाणिक ग्रन्थ

वेद-विषयक ग्रन्थ

१. **ऋग्वेदभाष्य**—(संस्कृत हिन्दी; ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित)—प्रतिभाग सहस्राधिक टिप्पणियां, १०-११ प्रकार के परिशिष्ट व सूची। प्रथम भाग ३५-००, द्वितीय भाग ३०-००, तृतीय भाग ३५-००।

२. **यजुर्वेदभाष्य-विवरण**—ऋषि दयानन्दकृत भाष्य पर पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत विवरण। प्रथम भाग २०×३० अठपेजी आकार के ११०० पृष्ठ सुन्दर पक्की जिल्द। मूल्य १००-००, द्वितीय भाग मूल्य ४०-००।

३. **तैत्तिरीय-संहिता**—मूलमात्र, मन्त्र-सूची-सहित। मूल्य ४०-००

४. **अथर्ववेदभाष्य**—श्री पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय कृत। ११-१३ काण्ड ३०-००; १४-१७ काण्ड २४-००; १८-१९ काण्ड २०-००; वीसवां काण्ड २०-००।

५. **ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका**—श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सम्पादित एव शतशः टिप्पणियों से युक्त। मूल्य ३०-००

६. **ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका**—परिशिष्ट आक्षेपों का उत्तर २-५०

७. **माध्यन्दिन (यजुर्वेद) पदपाठ**—शुद्ध संस्करण। मूल्य २५-००

८. **गोपथ ब्राह्मण (मूल)**—सम्पादक श्री डा० विजयपाल जी विद्यावारिधि। अब तक प्रकाशित सभी संस्करणों से अधिक शुद्ध और सुन्दर सस्करण। ४०-००

९. ऋक्सर्वानुक्रमणी—(कात्यायनमुनिकृत)—षड्गुरुशिष्य की समग्र वृत्ति सहित प्रथम बार छप रही है। मूल्य.......

१०. ऋग्वेदानुक्रमणी—वेङ्कटमाधवकृत। इस ग्रन्थ में स्वर छन्द आदि आठ वैदिक विषयों पर गम्भीर विचार किया है। व्याख्याकार—श्री डा० विजयपाल जी विद्यावारिधि। उत्तम-संस्करण ३०-००; साधारण २०-००।

११. ऋग्वेद की ऋक्संख्या—युधिष्ठिर मीमांसक। मूल्य २-००

१२. वैदिक-सिद्धान्त-मीमांसा—यु० मी० लिखित वेदविषयक १७ लेखों का संग्रह। (द्वितीय-संस्करण शीघ्र छपेगा)

१३. वैदिक-छन्दोमीमांसा—युधिष्ठिर मीमांसक। नया संस्करण मूल्य १५-००।

१४. वेदों का महत्त्व तथा उनके प्रचार के उपाय; वेदार्थ की विविध प्रक्रियाओं की ऐतिहासिक मीमांसा (संस्कृत-हिन्दी) यु० मी०। मूल्य ५-००।

१५. देवापि और शन्तनु के आख्यान का वास्तविक स्वरूप—लेखक—श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु। मूल्य १-००

१६. वेद और निरुक्त—श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु। २-००

१७. निरुक्तकार और वेद में इतिहास—„ „ २-००

१८. त्वाष्ट्री सरण्यू की वैदिक कथा का वास्तविक स्वरूप—लेखक—श्री पं० धर्मदेव जी निरुक्ताचार्य। १-००

१९. शिवशङ्करीय-लघुग्रन्थ पञ्चक—इसमें श्री पं० शिवशङ्कर जी काव्यतीर्थ लिखित वेदविषयक चतुर्वश-भुवन, वसिष्ठ-नन्दिनी, वैदिक-विज्ञान, वैदिक-सिद्धान्त और ईश्वरीय पुस्तक कौन ? नाम के पांच विशिष्ट निबन्ध हैं। ५-००

२०. **यजुर्वेद का स्वाध्याय तथा पशुयज्ञ समीक्षा** – लेखक—पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय । बढ़िया जिल्द २०-००, साधारण १६-००

२१. **वैदिक-पीयूष-धारा** - लेखक श्री देवेन्द्रकुमार जी कपूर। चुने हुए ५० मन्त्रों की प्रतिमन्त्र पदार्थ पूर्वक विस्तृत व्याख्या, अन्त में भावपूर्ण गीतों से युक्त । उत्तम जिल्द १५-००; साधारण १०-०० ।

२२. **उरु-ज्योति**—डा० श्री वासुदेवशरण अग्रवाल लिखित वेद-विषयक स्वाध्याय योग्य निबन्धों का संग्रह । पक्की जिल्द १६-००

२३. **ANTHOLOGY OF VEDIC HYMNS** - Swami Bhumananda Sarasvati. ५०-००

कर्मकाण्ड-विषयक ग्रन्थ

२४. **बौधायन-श्रौत-सूत्रम्** – (दर्शपूर्णमास प्रकरण)—भवस्वामी तथा सायण कृत भाष्य सहित (संस्कृत) ५०-००

२५. **दर्शपूर्णमास-पद्धति**- पं० भीमसेन कृत, भाषार्थ सहित। मूल्य २५-०० ।

२६. **कात्यायनगृह्यसूत्रम्**—(मूलमात्र) अनेक हस्तलेखों के आधार पर हमने इसे प्रथम वार छापा है। मूल्य २०-००

२७. **श्रौतपदार्थनिर्वचनम्**—(संस्कृत) श्रौत यज्ञों के पदार्थों का परिचय देने वाला ग्रन्थ । विना जिल्द ३४-००; जिल्द सहित ४०-००

२८. **अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधान्त श्रौत यज्ञों का संक्षिप्त परिचय**—लेखक—यु० मी०, डा० विजयपाल । दोनों भाग १०-००

२९. **संस्कार-विधि**—शताब्दी संस्करण, ४६० पृष्ठ, सहस्राधिक टिप्पणियां, १२ परिशिष्ट । मूल्य लागतमात्र १२-००, राज-संस्करण १५-०० । सस्ता संस्करण ५-२५, अच्छा कागज सजिल्द ७-५० ।

३०. **संस्कारविधि-मण्डनम्**—संस्कारविधि की व्याख्या। लेखक—वैद्य श्री रामगोपाल जी शास्त्री। अजिल्द मूल्य १०-००, सजिल्द मूल्य १४-००।

३१. **वैदिक-नित्यकर्म-विधि**—सन्ध्यादि पांचों महायज्ञ तथा बृहद् हवन के मन्त्रों की पदार्थ तथा भावार्थ व्याख्या सहित। यु०मी० ३-५० सजिल्द ५-००।

३२. **वैदिक-नित्यकर्म-विधि**—(मूलमात्र) सन्ध्या तथा स्वस्ति-वाचनादि बृहद् हवन के मन्त्रों सहित। मूल्य ०-७५

३३. **वेदोक्त-संस्कार प्रकाश**—पं० विट्ठल गावस्कर लिखित मराठी ग्रन्थ का भाषानुवाद। शीघ्र छपेगा

शिक्षा-निरुक्त-व्याकरण-विषयक ग्रन्थ

३४. **वर्णोच्चारण-शिक्षा**—ऋ० द० कृत हिन्दी व्याख्या। ०-६०

३५. **शिक्षासूत्राणि**—आपिशल-पाणिनीय-चान्द्र शिक्षा-सूत्र ६-००

३६. **शिक्षाशास्त्रम्**—(संस्कृत) जगदीशाचार्य। ७-५०

३७. **अरबी-शिक्षाशास्त्रम** ,, ,, ७-५०

३८. **निरुक्त-श्लोकवार्त्तिकम्**—केरलदेशीय नीलकण्ठ गार्ग्य विरचित। एक मात्र मलयालम लिपि में ताडपत्र पर लिखित दुर्लभ प्रति के आधार पर मुद्रित। आरम्भ में उपोद्घात रूप में निरुक्त-शास्त्र विषयक संक्षिप्त ऐतिह्य दिया गया है (संस्कृत)। सम्पादक—डा० विजयपाल विद्यावारिधि। उत्तम कागज, शुद्ध छपाई। मूल्य १००-००

३९. **निरुक्त-समुच्चय**—आचार्य वररुचि विरचित (संस्कृत)। सं०—युधिष्ठिर मीमांसक। मूल्य १५-००

४०. **अष्टाध्यायी**—(मूल) शुद्ध संस्करण। मूल्य ३-००

४१. **अष्टाध्यायी-भाष्य**—(संस्कृत तथा हिन्दी) श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत। प्रथम भाग २४-००, द्वितीय भाग २०-००, तृतीय भाग ३०-००।

४२. **धातुपाठ**—धात्वादिसूची सहित, सुन्दर शुद्ध संस्करण ३-००

४३. **वामनीयं लिङ्गानुशासनम्**—स्वोपज्ञ व्याख्यास हितम् ८-००

४४. **संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि**—लेखक—श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। प्रथम भाग १०-००, द्वितीय भाग (यु० मी०) १०-००।

४५. The Tested Fasiest Method of Learning and Teaching Sanskrit (First Book)—यह पुस्तक श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत **'बिना रटे संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि'** भाग एक का अंग्रेजी अनुवाद है। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पाणिनीय व्याकरण में प्रवेश करने वालों के लिये आधिकारिक पुस्तक है। कागज और छपाई सुन्दर। सजिल्द २५-००।

४६. **महाभाष्य**—हिन्दी व्याख्या (द्वितीय अध्याय पर्यन्त) पं० यु० मी०। प्रथम भाग ५०-००; द्वितीय २५-००; तृतीय २५-००।

४७. **उणादिकोश**—ऋ० द० स० कृत व्याख्या, तथा पं० यु० मी० कृत टिप्पणियों, एवं ११ सूचियों सहित। अजिल्द १०-००, सजिल्द १२-००।

४८. **दैवम् पुरुषकारवार्त्तिकोपेतम्**—लीलाशुक मुनि कृत १०-००

४९. **भागवृत्तिसंकलनम्**—अष्टाध्यायी की प्राचीन वृत्ति। ६-००

५०. **काशकृत्स्न-धातु-व्याख्यानम्**—संस्कृत रूपान्तर। यु० मी० १५-००।

५१. **काशकृत्स्न-व्याकरणम्**—सम्पादक यु० मी०। ६-००

५२. **शब्दरूपावली**—बिना रटे शब्द रूपों का ज्ञान कराने वाली। मूल्य ३-००।

५३. **संस्कृतधातुकोश**—पाणिनीय धातुओं का हिन्दी में अर्थ निर्देश। सम्पादक –युधिष्ठिर मीमांसक। मूल्य १०-००

५४. **अष्टाध्यायी-शुक्लयजुःप्रातिशाख्ययोर्मतविमर्शः** - डा० विजय पाल विरचित पीएच० डी० का महत्त्वपूर्ण शोध-प्रबन्ध (संस्कृत)। मूल्य ५०-००

५५. **वेदाङ्ग-सम्बद्ध-मीमांसा** यु० मी० लिखित वेदाङ्ग-सम्बन्धी शोधपूर्ण निबन्धों का संग्रह। (शीघ्र छपेगा)

अध्यात्म-विषयक ग्रन्थ

५६. **तत्त्वमसि-अद्वैतमीमांसा** – स्वा० विद्यानन्द सरस्वती ४०-००

५७. **ध्यानयोग-प्रकाश**—स्वामी दयानन्द सरस्वती के योग-विद्या के शिष्य स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत। बढ़िया पक्की जिल्द, मूल्य १६-००

५८. **अनासक्तियोग**—लेखक—पं० जगन्नाथ पथिक। १५-००

५९. **आर्याभिविनय (हिन्दी)**—ऋ० द०। गुटका सजिल्द ४-००

६०. **Aryabhivinaya**—English translation and notes (स्वामी भूमानन्द) दोरङ्गी छपाई। ४-००, सजिल्द ६-००

६१. **विष्णुसहस्रनाम-स्तोत्रम् (सत्यभाष्य-सहितम्)**—श्री पं० सत्यदेव वासिष्ठ कृत आध्यात्मिक वैदिक भाष्य (४ भाग)। प्रति भाग १५-००

६२. **श्रीमद्भगवद्-गीता-भाष्यम्**—श्री पं० तुलसीराम ६-००

६३. **अगम्य पन्थ के यात्री को आत्मदर्शन**—चंचल बहिन ३-००

नीतिशास्त्र-इतिहास-विषयक ग्रन्थ

६४. **वाल्मीकि-रामायण**—श्री पं० अखिलानन्द जी कृत हिन्दी अनुवाद सहित। **अप्राप्य**। अरण्य-किष्किन्धा काण्ड १०-००, युद्ध काण्ड १०-५०।

६५. **शुक्रनीतिसार**—व्याख्याकार श्री स्वा० जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती। विस्तृत विषय सूची तथा श्लोक-सूची सहित उत्तम कागज सुन्दर छपाई तथा जिल्द सहित। मूल्य ४५-००

६६. **विदुर-नीति**—युधिष्ठिर मीमांसक कृत प्रतिपद पदार्थ और व्याख्या सहित। वढ़िया कागज, पक्की सुन्दर जिल्द। मूल्य ३६-००

६७. **सत्याग्रह-नीति-काव्य**—आ० स० सत्याग्रह १९३९ ई० में हैदरावाद जेल में पं० सत्यदेव वासिष्ठ द्वारा विरचित। हिन्दी सहित। ५-००

६८. **संस्कृत व्याकरण-शास्त्र का इतिहास**—युधिष्ठिर मीमांसक कृत। नया परिष्कृत परिवर्धित चतुर्थ-संस्करण तीनों भाग।

१२५-००

६९. **संस्कृत व्याकरण में गणपाठ की परम्परा और आचार्य पाणिनि**—लेखक—डा० कपिलदेव शास्त्री एम० ए०। १५-००

७०. **ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन**—इस वार इस में ऋषि दयानन्द के अनेक नये उपलब्ध पत्र और विज्ञापन संगृहीत किए गये हैं। इस वार यह संग्रह चार भागों में छपा हैं। प्रथम दो भागों में ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन आदि संगृहीत हैं। तीसरे और चौथे भाग में विविध व्यक्तियों द्वारा ऋ० द० को भेजे गये पत्रों का संग्रह है। प्रथम भाग ३५-००, द्वितीय भाग ३५-००, तृतीय भाग ३५-००, चतुर्थ भाग ३५-००।

७१. **विरजानन्द-प्रकाश**—लेखक—पं० भीमसेन शास्त्री एम० ए०। नया परिवर्धित और शुद्ध संस्करण। मूल्य ३-००

७२. **ऋषि दयानन्द सरस्वती का स्वलिखित और स्वकथित आत्मचरित**—सम्पादक पं० भगवद्दत्त। मूल्य ३-००

७३. **ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत-साहित्य को देन**—लेखक—डा० भवानीलाल भारतीय एम०ए०। सजिल्द १५-००

दर्शन-आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ

७४. **मीमांसा-शाबर-भाष्य**—आर्षमतविमर्शिनी हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार—युधिष्ठिर मीमांसक। प्रथम भाग ४०-००; द्वितीय भाग ३०-००; तृतीय भाग ५०-००; चतुर्थ भाग ४०-००

७५. **नाड़ी-तत्त्वदर्शनम्**—श्री पं० सत्यदेवजी वासिष्ठ। ३०-००

७६. **षट्कर्मशास्त्रम्**—(संस्कृत) जगदीशाचार्य। अजिल्द ८-००

७७. **परमाणु-दर्शनम्**—(संस्कृत) जगदीशाचार्य। अजिल्द ८-००

प्रकीर्ण ग्रन्थ

७८. **सत्यार्थप्रकाश**—(आर्यसमाज-शताब्दी-संस्करण)—१३ परिशिष्ट ३५-०० टिप्पणियां, तथा सन् १८७५ के प्रथम संस्करण के विशिष्ट उद्धरणों सहित। राजसंस्करण मूल्य ३५-००, साधारण संस्करण ३०-००।

७९. **दयानन्दीय लघुग्रन्थ-संग्रह**—१४ ग्रन्थ, सटिप्पण, अनेक परिशिष्टों और सूचियों के सहित। मूल्य लागतमात्र २५-००

८०. **भागवत-खण्डनम्** ऋ० द० की प्रथम कृति। अनु० युधिष्ठिर मीमांसक। मूल्य ३-००

८१. **ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन**—इस में पौराणिक विद्वानों तथा ईसाई मुसलमानों के साथ ऋषि दयानन्द के अत्यन्त प्रामाणिक एवं महत्त्वपूर्ण शास्त्रार्थ दिये गये हैं। अनन्तर पूना में सन् १८७५ तथा वम्वई में सन् १८८२ में दिए गए व्याख्यानों का संग्रह है। इस संस्करण से पूर्व के छपे पूना के व्याख्यानों में अनुवादकों ने मन माना घटाया-वढ़ाया है। हमने सन १८७५ में व्याख्यान काल में छपे हुए मूल मराठी भाषा में प्रकाशित ट्रैक्टों के अनुसार नया प्रामाणिक अनवाद दिया है। बम्वई के ७४ प्रवचनों का सारांश तो इसमें प्रथमवार प्रकाशित हुआ है। साथ में ८-१० विशिष्ट परिशिष्ट दिये हैं। सुन्दर सुदृढ़ कागज, पूरे कपडे की सुन्दर जिल्द, मूल्य ३०-००

८२. **दयानन्द-शास्त्रार्थ-संग्रह**—संख्या ८१ के ग्रन्थ से पृथक् स्वतन्त्र रूप से छपा है। सं० डा० भवानीलाल भारतीय।

सस्ता संस्करण १०-००

८३. **दयानन्द-प्रवचन-संग्रह**—(पना-वम्वई-प्रवचन)। पूर्ववत् स्वतन्त्र रूप में छपा है। अनुवादक और सम्पादक पं० युधिष्ठिर मीमांसक। मूल्य १०-००

८४. **ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास**—लेखक—युधिष्ठिर मीमांसक। नया परिशोधित परिवर्धित संस्करण। ४०-००

८५. **ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बद्ध कतिपय महत्त्वपूर्ण अभिलेख**—इसमें ऋ०द० के नये उपलब्ध पत्र, वम्वई आर्यसमाज के आदिम २८ नियमों की ऋ० द० कृत व्याख्या पं० गोपालराव हरि देशमुख लिखित दयानन्दचरित मराठी का हिन्दी रूपान्तर, आर्यसमाज काकडवाडी बम्वई की पुरानी गुजराती में लिखित कार्यवाही (सन १८८२ में जव ऋ० द० वम्वई में थे) का हिन्दी रूपान्तर आदि। मूल्य ८-००

८६. अष्टोत्तरशतनाममालिका—सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास की सुन्दर प्रामाणिक विस्तृत व्याख्या। लेखक पं० विद्यासागर शास्त्री। ६-००

८७. कन्योपनयन-विधि–अर्थात् 'कन्योपनयन-प्रतिषेध' ग्रंथ का खण्डन। श्री पं० महाराणीशंकर। अपने विषय की प्रामाणिक पुस्तक। ८-००

८८. जगद्गुरु दयानन्द का संसार पर जादू—श्री मेहता जैमिनि बी० ए० (स्व० विज्ञानानन्द सरस्वती)। ५८ वर्ष पश्चात् पुनः छपा। १-००

८९. आर्य-मन्तव्य-प्रकाश—महामहोपाध्याय पं० आर्यमुनि। प्रथम भाग ५-०० द्वितीय भाग ५-००।

९०. दयानन्द-अङ्क (वेदवाणी का विशेषांक)—इसमें ऋ०द० के जीवन से सम्बद्ध अभी तक अज्ञात और प्रकाशित विशिष्ट घटनाओं तथा ऋ० द० की यात्रा का विवरण तिथि संवत्, तारीख, वार, सन् सहित। १०-००

वेदवाणी (मासिक पत्रिका)

वेदवाणी पत्रिका ३६ वर्षों से विना नागा छप रही है। इस में वेद तथा अन्य विषयक शोधपूर्ण लेख छपते हैं। वार्षिक चन्दा १२-००, विदेशों में २५-००।

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

रामलाल कपूर ट्रस्ट

१—बहालगढ़, जिला—सोनीपत (हरयाणा) १३१०२१

२—रामलाल कपूर एण्ड संस, पेपर मर्चेण्ट, नई सड़क देहली।